सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

अगस्त, 2018 वर्ष 17 अंक 06

ईदे क़ुर्बां

ईदे क़ुर्बां आई है
रहमतो बरकत लाई है
ईदगाह सब जाएंगे
पढ़ के दोगाना आएंगे
जिनको वुसअ़त मिली है रब से
क़ुर्बानी वह करेंगे दिल से
गोश्त वो खाएं खिलाएंगे
गुरबा को न भुलाएंगे
ह़लाल गोश्त नेअ़मत है ख़ुदा की
करम से उसने हम को अ़ता की
शुक्रे ख़ुदा हम लाएं बजा
जिसने ऐसी दी है ग़िज़ा
नबी पे रहमत और सलाम
या रब नाज़िल कर तू मुदाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। SACHCHARAHI A/c. No. 10863759642 IFS Code: SBIN0000125 Swift Code: SBININBB157 State Bank of India, Main Branch, Lucknow. और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें। बराये करम पैसा जमा हो जाने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 या ईमेल पर खरीदारी नम्बर के साथ इत्तिला ज़रूर दे दें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
क़ुर्बानी का बकरा	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	12
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0	18
नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत	मौलाना मंजूर नोमानी रह0	20
क़ुर्बानी (बलिदान)	इदारा	24
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
मछली वाले नबी	हुसैन अहमद	28
क़ारून और उसका ख़ज़ाना	हुसैन अहमद	31
ख़ा–नए–कअ़बा और हज	मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी रह0	33
शादी ख़ाना आबादी	मौलाना अब्दुल क़ादिर नदवी	35
स्वतंत्रता दिवस	इदारा	39
निर्माता तथा स्वामी के समक्ष	सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी	40
उर्दू सीखिए	इदारा	41
अहले ख़ैर हज़रात	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

–मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-माइदाः

अनुवाद–

और जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी निशानियों को झुठलाया वही लोग दोज़ख़ वाले हैं(10) ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह के उस एहसान को याद करो जब एक क़ौम ने तुम पर हाथ उठाने चाहे तो अल्लाह ने उनके हाथ तुम से रोक दिये और अल्लाह से डरते रहो, और ईमान वालों को चाहिए कि वे केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखें[(1)](11) और बेशक अल्लाह ने बनी इस्राईल से अहद लिया था और हमने उनमें बारह ज़िम्मेदार निर्धारित किये थे और अल्लाह ने कहा था कि मैं तुम्हारे ही साथ हूं अगर तुम नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात अदा करो और मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और उनको मज़बूत करो और अल्लाह को अच्छी तरह कर्ज़ दो[(2)], तो मैं ज़रूर तुम्हारी बुराइयों को मिटा दूंगा और तुम्हें ऐसी जन्नतों में दाखिल कर दूंगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, फिर उसके बाद भी जो इनकार करे तो वह सही रास्ते से भटक गया(12) फिर उनके अहद तोड़ने की वजह से हमने उन पर फिटकार की और उनके दिलों को कठोर कर दिया, वे बातों को अपनी जगह से बदलने लगे और जो कुछ उनको नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा उन्होंने भुला दिया[(3)], और उनमें थोड़े लोगों को छोड़ कर आपको बराबर उनकी ख़यानत का पता चलता रहता है तो आप उनको माफ़ कर दीजिए और उनको क्षमा कर दीजिए बेशक अल्लाह भलाई करने वालों से प्रेम करता है[(4)] (13) और जो कहते हैं कि हम ईसाई हैं हमने उन से भी अहद लिया था तो उनको जो भी नसीहत की गई उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे तो हमने क़यामत तक के लिए उनमें परस्पर दुश्मनी व नफ़रत डाल दी और जो कुछ भी वे करते रहते हैं अल्लाह आगे उनको सब बता देगा[(5)](14) ऐ अहल–ए–किताब तुम्हारे पास हमारे पैग़म्बर आ चुके, किताब की जो चीज़ें तुम छिपाया करते थे उनमें बहुत सी चीज़ें वे तुम्हारे लिए खोल–खोल कर बयान करते हैं और बहुत सी चीज़ों को माफ़ भी कर जाते हैं[(5)] और तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से रोशनी और खुली किताब आ चुकी[(7)](15) जो भी अल्लाह की खुशी चाहता है उसके द्वारा अल्लाह उनको सलामती के रास्तों पर डाल

देता है और अपनी आज्ञा से उनको अंधेरों से निकाल कर रोशनी में ले आता है और उनको सीधा रास्ता चलाता है(16) जिन्होंने भी कहा कि अल्लाह ही मसीह पुत्र मरयम है वे निश्चित रूप से काफ़िर हो गए आप कह दीजिए कि अगर वह मसीह पुत्र मरयम और उनकी मां और ज़मीन का सब कुछ नष्ट करना चाहे तो अल्लाह के सामने कौन है जो कुछ भी अधिकार रखता हो और आसमानों और ज़मीन और उनके बीच जो भी है उसकी बादशाही अल्लाह ही की है जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह ही को हर चीज़ की पूरी सामर्थ्य (कुदरत) प्राप्त है[8](17)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. मक्के के काफ़िरों ने कोई कमी न छोड़ी लेकिन अल्लाह ने उनकी रक्षा की, अब उन पर विजय के बाद मुसलमानों को न्याय से ही काम लेना है जिसका निर्देश पहली आयतों में दिया जा चुका है, हो सकता है कि इससे किसी के दिल में ख़याल हो कि इस नर्म व्यवहार से तो वे फिर निडर हो जाएंगे, इसलिए कहा कि अल्लाह से डरो और उसी पर भरोसा रखो।

2. ख़ुदा को कर्ज़ देने का मतलब उसके रसूलों के समर्थन में दीन के रास्ते पर ख़र्च करना है जिस तरह कर्ज़ देने वाला वापसी की आशा रखता है और लेने वाला अदा करने का ज़िम्मेदार होता है इसी तरह अल्लाह के रास्ते में खर्च की हुई चीज़ हरगिज़ कम न होगी इसकी अदाएगी अल्लाह ने अपने ज़िम्मे ले ली है।

3. बनी इस्राईल के अहद तोड़ने का उल्लेख पहले हो चुका है, दिलों की सख़्ती उसी के परिणाम स्वरूप पैदा हुई फिर उन्होंने किताबों में उलट फेर की और उसका बड़ा हिस्सा भुला दिया इसको खुद ईसाई इतिहासकारों ने भी माना है।

4. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश दिया जा रहा है कि अभी आप उनके बारे में कोई कार्यवाही न कीजिए अपने समय पर अल्लाह उनसे खुद निपट लेगा।

5. ईसाइयों का भी वही हाल हुआ, उन्होंने भी अहद को भुला दिया तो अल्लाह ने उनमें आपसी फूट डाल दी और उनके दसियों सम्प्रदाय हुए जो एक दूसरे के जानी दुश्मन थे, विश्व युद्ध वे आपस ही में लड़े जिनमें लाखों लोग मारे गए।

6. जो तथ्य उन्होंने छिपाए थे उनमें जिनका बयान ज़रूरी था वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बयान किया और जो अनावश्यक थे उनको नज़रअंदाज़ किया।

7. ज़ाहिर में मालूम होता है कि रौशनी का मतलब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जो पूरी मानव जाति के लिए रौशनी हैं और किताब–ए–मुबीन का मतलब पवित्र कुर्आन है जो सारी मानव जाति के लिए खुली किताब है।

8. इसमें तौहीद का प्रताप है ईसा को खुदा का बेटा और

शेष पृष्ठ....23 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

ऊँटों और पशुओं की गर्दन में घंटा बांधने की मुमानियतः-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस काफिले में कुत्ता और घंटी होती है फरिश्ते उस काफिले के साथ नहीं होते। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया की घंटी शैतान के बाजों में से एक बाजा है। (बुखारी)

जल्लाला ऊँट (गंदगी खाने वाले ऊँट) पर सवारी करने की मुमानियतः-

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जल्लाला ऊँट पर सवार होने से मना फरमाया है। अर्थातः गंदगी खाने वाले ऊँट पर सवार होने से। (अबू दाऊद) मना करने की हिकमत यह भी हो सकती है कि उसके पसीने में दुर्गंध होती है।

मस्जिद में थूक खंकार की मुमानियतः-

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मस्जिद में थूकना बुरा है और उसका कफ़्फ़ारा यह है कि उसको मिटटी से दबा दिया जाये। (बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किब्ले की दीवार में नाक थूक या खंकार देखा तो उसको खुरच डाला।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह मस्जिदें मल मूत्र जैसी नापाक चीजों के लिए नहीं हैं यह तो अल्लाह का जिक्र करने और कुर्आन पाक पढ़ने के लिए हैं। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जैसा फरमाया। (मुस्लिम)

हज़रत बुरैदा रज़ि0 से रिवायत है कि एक आदमी मस्जिद में तलाश करता हुआ पहुंचा और कहा कि कोई लाल रंग के ऊँट का पता बता सकता है, आप ने फरमाया खुदा करे तुम को न मिले। यह मस्जिदें जिस काम के लिए बनाई गई हैं उसी के लिए हैं।

(मुस्लिम)

मस्जिद में शेअ़र पढ़ने की मुमानियतः-

हज़रत अम्र बिन शुऐब अपने बाप से वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिदों में बेचने—खरीदने, गुमशुदा चीज के तलाश करने से और शेअ़र पढ़ने से मना फरमाया है।

(अबू दाऊद—तिर्मिजी)

हज़रत साइब बिन यजीद रज़ि0 सहाबी से रिवायत है कि मैं मस्जिद में था एक शख्स ने मुझे कंकरी मारी, मैंने निगाह फेर कर देखा तो वह हज़रत उमर रज़ि0 थे, मुझ से कहा उन दोनों आदमियों को पकड़ लाओ, मैं पकड़ लाया, तो हज़रत उमर रज़ि0 ने उन से पूछा तुम कहां के रहने वाले हो, उन्होंने कहा कि हम ताइफ के रहने वाले हैं, हज़रत उमर ने कहा कि अगर तुम इस शहर के होते तो मैं तुम को सजा देता इस वजह से कि तुमने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में आवाज़ बुलन्द की है। (बुखारी)

लहसुन, प्याज या कोई बदबूदार चीज़ खा कर मस्जिद में आने की मुमानियतः-

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख्स लहसुन खाये वह हमारी मस्जिद में हरगिज़ न आये। (बुखारी–मुस्लिम)

मुस्लिम शरीफ की रिवायत में है कि हमारी मस्जिदों में न आये। लहसुन से मुराद कच्चा लहसुन है।

हज़रत अनस से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो लहसुन खाये न वह हमारे करीब हो, न हमारे साथ नमाज़ पढ़े। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो लहसुन या प्याज खाये वह हमसे अलग रहे या हमारी मस्जिद से अलग रहे। (बुखारी–मुस्लिम)

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि जो शख्स प्याज या लहसुन और गंदना खाये वह हमारी मस्जिदों में हरगिज न आये, इसलिए कि जिस चीज से आदमियों को तकलीफ होती है उससे फरिश्तों को भी तकलीफ होती है।

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने जुमे के दिन खुत्बा दिया और खुत्बे में फरमाया ऐ लोगो तुम लहसुन और प्याज खाते हो और मैं दोनों को बुरा समझता हूं, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा कि जब किसी आदमी के मुंह से उसकी दुर्गन्ध आती तो आप उसको निकाल देते थे और आदेश देते थे कि बक़ीअ़ तक चला जाये, पस जिस को लहसुन प्याज खाना भी हो तो उसको इतना पकाये कि उसकी दुर्गन्ध खत्म हो जाये। (मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

माफ करने की फज़ीलत

जो गुस्से को पी जाते हैं और दूसरों के कुसूर माफ कर देते हैं ऐसे नेक लोग अल्लाह को बहुत पसंद हैं।

(सूरः आले इमरान-134)

कुर्बानी का बकरा

(दादा पोते की वार्ता)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

दादा की आदत है कि वह कुर्बानी का बकरा एक वर्ष पहले ख़रीदते हैं, उसको एक साल पालते हैं खूब मोटा करते हैं फिर कुर्बानी करते हैं और ज़िलहिज्ज के महीने ही में ढूंढ कर बधिया बच्चा अगले साल के लिए खरीद लेते हैं। पोते ने पूछा दादा! आप साल भर पहले ही बकरा क्यों खरीदते हैं? उत्तर मिला बेटे दो कारणों से मैं बकरा बहुत पहले ख़रीदता हूं, पहली बात तो यह कि मुझे यकीन हो जाता है कि बकरा एक साल से ऊपर का है, कुर्बानी के दिनों में बकरा ख़रीदने में कभी धोखा हो जाता है, बकरा साल भर का नहीं होता मगर बेचने वाला कहता है साल भर का है, जब उससे पूछा जाता है कि दांता है तो कह देता है कि बकरे के सब दांत हैं, देख लो, बकरे के दांतने की पहचान मुझे भी न थी वह तो भला हो मैकू भाई यादव का उन्होंने मुझे समझाया कि दांत तो सब बकरे के मुंह में बहुत पहले से होते हैं जो दूध के दांत कहलाते हैं लेकिन जब बकरा साल भर की अवस्था को पहुंचता है तो उसके बीच के दूध के दांत गिर जाते हैं और उसकी जगह दो नये दांत निकल आते हैं यह दोनों दांत दूसरे दांतों से कुछ बड़े होते हैं, मैं तो बकरे का दांतना समझ गया और पहचान भी गया मगर जो जानवर नहीं पालता है उसके लिए पहचानना कठिन है और वह कभी धोखा खा जाता है।

यही बात पड़वे की कुर्बानी में भी होती है बहुत से लोग दूसरे की कुर्बानी का जिम्मा लेते हैं और फिर हिस्सों का एलान कर देते हैं, लोग उनको पैसे दे देते हैं वह कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी कर देते हैं हिस्सा लेने वाले जा कर अपने हिस्से का गोश्त ले आते हैं और कभी तो नहीं भी लाते हैं, कई हिस्सा लेने वाले पड़वे की सूरत तक नहीं देखते, दांत देखना तो दूर की बात है। आम तौर से यह काम मदरसे वाले करते हैं या मुसलमानों के कल्याण के लिए काम करने वाली समितियां करती हैं। बाज़ जगह देखा गया है कि उदंत पड़वे कुर्बानी में ज़ब्ह कर दिये जाते हैं, जो सही नहीं है, हिस्सा लेने वालों को चाहिए कि पड़वा अपने आंख से देख लें।

दूसरी अहम बात यह है कि कुर्बानी की खाल संस्था वाले अपना हक़ समझते हैं हिस्सा लेने वाले को कहना चाहिए कि खाल मैंने आपके मदरसे को दी, या मदरसे वाले हिस्सा लेने वाले से कहें कि खाल मदरसे को दे दें वह खुशी से इस पर तैयार हो जाएगा, बेहतर यही है लेकिन अगर ऐसा न करें तो भी उर्फ़ आम में यह खाल का ले लेना जाइज़ है मुफ़्ती साहिब का यही फ़तवा है।

दादा ने बकरा पहले खरीदने का दूसरा कारण यह बताया कि मुझे बकरे को खिलाने पिलाने और मोटा करने का पर्याप्त अवसर मिल जाता है, तथा उससे प्रेम करने का अवसर भी प्राप्त हो जाता है, जिस समय मैं उसके गले पर छुरी रखता हूं मुझे दुख होता है। परन्तु मैं अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए छुरी चला कर ज़ब्ह कर देता हूं हो सकता है इस में मुझे दोहरा सवाब मिले एक बकरे का मूल्य भेंट करने का दूसरे उसके प्रेम को अल्लाह के आदेश पर भेंट करने का, पोते ने कहा कि अपने बेटे पोते से तो बहुत प्रेम होता है, फिर अल्लाह तआला ने इस्माईल अलै0 को क्यों बचा लिया, उत्तर मिला बेटे अल्लाह के किसी काम पर सवाल न किया करो, और यह समझो कि मनुष्य तथा पशु के मक़ाम में बहुत बड़ा अंतर है जो लोग मनुष्य और पशु के अंतर को नहीं समझते और दोनों को समान समझ बैठे हैं उन्हीं के मन में ज़बीहे पर आपत्ति आती है इस अंतर को अनेक उदाहरणों से समझाया जा सकता है परन्तु इस समय उसका मौक़ा नहीं है, पोते ने कहा दादा साल भर पहले जानवर खरीदना, उसको पालना, उससे प्रेम करना हर एक के बस की बात तो नहीं है। उत्तर मिला बेटे यह ज़रूरी कहां है परन्तु जो ऐसा कर सके उसके लिए सवाब अधिक है। पोते ने दादा से पूछा कि दादा एक वतनी भाई कह रहे थे कि मुसलमान क्रूर और निर्दयी होता है उसको दूसरे जान वाले पशु पक्षी को काटने पर दया नहीं आती, वह उसे काटता और उसको खा भी जाता है, ऐसे भाइयों को कैसे सन्तुष्ट किया जाय?

दादा ने कहा बेटे हिन्दू भाइयों को इस मसअले को समझा कर सन्तुष्ट करना कठिन है, फिर भी उन से बड़ी गंभीरता से इस प्रकार बात करना चाहिए कि भाई! हमारे देश के हिन्दू भाइयों में अधिकांश हिन्दू भाई मांसाहारी हैं आप उनको निर्दयी नहीं समझते फिर संसार में सबसे अधिक ईसाई धर्म के लोग हैं वह सब के सब मांसाहारी है, अपितु उनका प्रिय आहार बीफ़ है आप उनको निर्दयी नहीं कहते उन सब से आप की मित्रता है, निःसंदेह शाकाहारी लोग पशुओं के लिए दयावान होते हैं परन्तु क्या वह कोई जीव नहीं मारते, सांप, बिच्छू, खेती को हानि पहुंचाने वाले तथा मनुष्यों को हानि पहुंचाने वाले कीटाणुओं को नहीं मारते? अवश्य मारते हैं क्या हमारी सरकार जंगलों में बाघों को सुरक्षा नहीं देती क्या उनका आहार मांस के अतिरिक्त कुछ और है? फिर बाघों को निर्दयी समझ कर उनको मारते क्यों नहीं? यदि वह कहें कि प्रकृति ने उनका आहार मांस ही बनाया है। अतः वह मांस खाने पर विवश हैं, तो इस से यह परिणाम सिद्ध हुआ कि अल्लाह ने जिस का आहार मांस ही बनाया है वह यदि दूसरे जीव धारी को मार कर खाये तो क्रूरता नहीं है, अब यहीं से समझना चाहिए कि जिस को निर्माता दूसरे जीवधारियों को एक नियम से ज़ब्ह कर के मांस

खाने की अनुमति दे वह अगर उस नियम के अनुसार मांस खाये तो वह क्रूर नहीं है, आपके जो हिन्दू भाई मांस खाते हैं वह तो अपनी बुद्धि से निर्णय ले कर खाते हैं परन्तु मुसलमान ऐसा नहीं कर सकता, मुसलमानों के लिए अल्लाह की ओर से कुछ नियम नियुक्त हैं, कुछ पशु पक्षी नामित किये गये हैं मुसलमान उन्हीं का मांस खा सकता है, फिर यह भी आवश्यक है कि उस पशु पक्षी को किसी मुसलमान ने अल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह किया हो, यदि मुसलमान अल्लाह का नाम लिये बिना ज़ब्ह कर दे तब भी वह मांस नहीं खाया जा सकता, अब अगर अल्लाह की अनुमति से मुसलमान ज़ब्ह करके विशेष जीवधारियों को खाए तो यदि उसे क्रूर तथा निर्दयी कहा जाता है तो यह तो ईश्वर को निर्दयी कहना हुआ, सोचो अल्लाह अपने निर्मित बन्दों की जानें किस किस प्रकार लेता है, बीमारी से, पानी में डुबो कर, आग लग जाने पर, एक्सीडेंट द्वारा और जाने किसी तौर पर, बूढे जवान बच्चों के प्राण निकलवा लेता है, इसका उसको अधिकार है वह महा दयालू तथा बड़ा कृपालू है। अतः यदि वह मुसलमानों को कुछ विशेष पशु पक्षियों का उस का नाम लेकर ज़ब्ह करके खाने की अनुमति देता है और मुसलमान उन पशुओं को नियमानुसार ज़ब्ह करके खाते हैं तो वह कदापि क्रूर नहीं हैं, फिर मुसलामनों के लिए इस अनुमति के अतिरिक्त किसी अन्य जीवधारी की अकारण जान लेना महा पाप है और मुसलमान इसका पालन करता है। मुसलमान ही वास्तव में इस संसार में दयावान है यदि वह अपने धर्म का पालन करे।

पोते ने कहा दादा बात समझ में आ गई अब मैं वतनी भाईयों को इन्हीं बातों के प्रकाश में बात कर के उन को संतुष्ट करने का प्रयास करूंगा लेकिन मैं यह जानना चाहूंगा कि मुसलमानों को यह अनुमति कहां मिली है? दादा ने उत्तर दिया कि बेटे मुसलमानों के पास अल्लाह की उतारी हुई पुस्तक पवित्र कुर्आन है जो उसने अपने अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी है जो हर प्रकार से अक्षर अक्षर सुरक्षित है, मूल आदेश मांस खाने के पवित्र कुर्आन में हैं। और उनकी विस्तृत जानकारी हदीस और फ़िक़्ह की पुस्तकों में है हम यहां केवल पवित्र कुर्आन के कुछ संदर्भ बताते हैं सुनोः

सूरे अल–अनआम आयत 118 में बताया गया है– *''अतः जिस जानवर पर ज़ब्ह करते वक़्त अल्लाह का नाम लिया गया हो उसे खाओ यदि तुम उसकी आयतों को मानते हो''।*

सूरे अल–माइदा आयत नं0 1 में आया हैः–

''तुम्हारे लिए चौपायों की जाति के जानवर हलाल हैं सिवाय उन के जो तुम्हें बताए जा रहे हैं। (तुम हलाल जानवरों को खाओ)

इसी सूरे की आयत नं0 3 में हराम जानवरों का ज़िक्र इस तरह :–

''तुम्हारे लिए हराम हुआ मुर्दार तथा रक्त, सूअर का मांस

शेष पृष्ठ....17 पर

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

मानव प्रवृत्ति के प्रश्नः–

मनुष्य की प्रवृत्ति के कुछ प्रश्न हैं जो रह–रह कर उसकी गहराइयों से उठते हैं। इन प्रश्नों को न हीलों बहानों से टाला जा सकता है न उनके उत्तर की अनदेखी की जा सकती है। इस संसार को कौन चला रहा है? उसके क्या–क्या गुण हैं? उसका हमसे और हमारा उससे क्या सम्बंध है? उसको क्या पसन्द है और क्या नापसन्द? और यह कि इस जीवन का अन्त और इस लोक की अन्तिम सीमा क्या है? यह वह प्रश्न हैं जो बिल्कुल स्वाभाविक हैं और मनुष्य की शुद्ध प्रवृत्ति को पूरा हक है कि वह इन्सान से पूछे कि वह जिस दुन्या में बसता है उसको किसने बनाया और कौन उसको चला रहा है? फिर जब तक उसको चलाने वाले की सिफात मालूम न हों उसको उससे कोई हार्दिक लगाव और मानसिक सम्बन्ध नहीं पैदा हो सकता। दुन्या का भी यही हाल है कि जब तक किसी व्यक्ति का जीवन चरित्र, आचरण और गुणों की हमें जानकारी नहीं होती, हमें मात्र उसके नाम से सम्बन्ध पैदा नहीं होता। फिर यदि हम ब्रह्माण्ड के सृजक के बारे में इसके अलावा कि वह मौजूद है, कुछ न जानते हों, उसकी रुबूबियत (पालनहार होना) व रहमत (कृपा), प्रेम व लगाव और उसके शौर्य के अन्य गुण, उसका हम से निकटतम सम्बन्ध और हमारी उससे अति आवश्यकता और उसके सहारे हमारे ठहराव व अस्तित्व का हाल मालूम न हो तो उससे हमें वह सम्बन्ध पैदा नहीं हो सकता जो ऐसी ज़ात से पैदा होना चाहिए।

इसी प्रकार वह अपने इस सवाल में बिल्कुल हक पर है कि इस धरती पर बसने वालों से दुन्या के बादशाह की क्या अपेक्षाएं हैं? ताकि उसकी सलतनत का निज़ाम व क़ानून मालूम करें।

इसी प्रकार यह भी स्वाभाविक बात है कि वह इस जिन्दगी के बारे में जानना चाहे कि इसका अंत व परिणाम क्या है, लौट के जाना कहां है और इसके बाद क्या होगा? क्योंकि यह सवाल उसके भविष्य और वर्तमान दोनों से सम्बन्धित है। जिस व्यक्ति को यह मालूम हो जाए कि इस जिन्दगी के बाद दूसरी जिन्दगी भी है, जिसमें पहली जिन्दगी का हिसाब किताब होगा, और इस पहली जिन्दगी के कर्मों का फल मिलेगा, उस व्यक्ति की कार्य पद्धति मौजूदा जिन्दगी में उस व्यक्ति से बिल्कुल भिन्न होगी, जो मौजूदा जिन्दगी

के अलावा किसी दूसरी जिन्दगी की कोई कल्पना नहीं करता। इसलिए यह सवाल उसकी इस जिन्दगी में बड़ा महत्व रखता है, और जवाब में देर करने की गुंजाइश नहीं क्योंकि इस समस्या के समाधान के बिना इस जीवन की सही संरचना नहीं हो सकती।

हमारे जीवन के यह बुन्यादी प्रश्न हैं जिन पर मोक्ष व निजात का दारोमदार और हमारे भाग्य का फैसला निर्भर है जिसके जवाब में जरा सी गलती हमारी बर्बादी का कारण बन सकती है। यह जीवन हम को सिर्फ एक बार के लिए मिला है और यह हमारी सबसे कीमती पूंजी है वह सिर्फ क़यास, अनुमान व तजर्बः में नहीं गुज़ारी जा सकती।

इन प्रश्नों के अलावा कुछ प्रश्न और उनका सम्बंध भी हमारे दैनिक जीवन से है। हमारा अपने आस–पास की दुन्या से और उसका हमसे क्या नाता है? इस संघर्षपूर्ण जीवन में हमारी हैसियत और हमारे वजूद का मक़सद क्या है? हम मातहत हैं या स्वतंत्र या गैर ज़िम्मेदार? यदि ज़िम्मेदार हैं तो किसके सामने और हमारी जिम्मेदारी किस हद तक है? हमारी क्षमताएं और योग्यताएं हमारी अपनी हैं या किसी दूसरे की सम्पत्ति? इनकी प्रयोग विधि क्या है? इस जीवन का लक्ष्य क्या है? और ऐसे अनेक प्रश्न हैं जो हमारे लिए स्वाभाविक रूप से उत्तर चाहते हैं।

प्रश्नों के उत्तर की दो राहें:–

इन प्रश्नों के उत्तर की दो ही राहें हो सकती हैं।

1. एक यह कि इनका उत्तर हम अपने ज्ञान व समझ और सोच विचार के आधार पर स्वयं दें। लेकिन इस विधि से हम ज़ियादा से ज़ियादा जिस नतीजे पर पहुंच सकते हैं वह यह होगा कि इस संसार का कोई बनाने वाला जरूर है, रहा यह सवाल कि उसकी सिफ़ात क्या हैं? तो इसका उत्तर हम अपने स्वयं की सोच के आधार पर नहीं दे सकते।

हमारा दिमाग अपनी चरम सीमा को उड़ान में भी क़यास व अनुमान की सीमाओं से आगे नहीं बढ़ सकता, और यह मामला ऐसा है कि इसमें अनुमान की गुंजाइश नहीं इसलिए कि ख़ालिक व मखलूक के बीच कोई अनुरूपता ही नहीं कि ख़ल्क़ (सृष्टि) की दिखाई पड़ने वाली तथा महसूस की जाने वाली चीज़ों को देख कर ख़ालिक़ (रचयिता) की सिफतों (गुणों) की कल्पना की जा सके।

इसके बाद दूसरा कठिन प्रश्न इसको निश्चित करना है कि वह हम से क्या चाहता है? क्या उसको पसन्द है और क्या नापसन्द हम देखते हैं कि मित्रों और प्रियजनों और खास साथियों की खुशी पसन्दीदगी और रजामंदी के बारे में भी कतई राय क़ायम करना मुश्किल है और इसमें कभी कभी बड़ी–बड़ी गलतियां हो जाती हैं, फिर एक अगोचर ज़ात और अगम हस्ती की पसन्द और

नापसन्द का सुनिश्चित करना मात्र कयास व अनुमान से किस प्रकर सम्भव है?

फिर इस ज्ञान, सूझ–बूझ तथा चिन्तन–मनन का नतीजा एक नहीं है, नतीजों में घोर विरोधाभाष है। किसी ने अपने सोच विचार के आधार पर यह नतीजा निकाला है कि यह कारखाना बिना किसी बनाने वाले के बन गया और बिना किसी चलाने वाले के चल रहा है और खुद ही खत्म हो जायेगा। किसी के नजदीक अगर इसका कोई निर्माता है तो उसका अब बनाई हुई चीजों से कोई तअल्लुक नहीं रहा। किसी के नजदीक इसका बनाने वाला ही इसका वास्तविक मालिक था मगर अब वह दूसरों के हक़ में अपने मालिकाना अधिकारों को छोड़ चुका है और उसके साम्राज्य में अब वह बादशाही कर रहे हैं। किसी ने इस दुन्या की हर चीज़ को जिससे उसको देखने में नफा–नुकसान पहुंचता है या पहुंच सकता है अपना इलाह (पूज्य) और हर शक्तिमान को अपना हाकिम बना लिया, और उसके बाहरी इन्द्रियों, दिन प्रतिदिन के अनुभव और बुद्धि व समझ ने उसको इसी नतीजे पर पहुंचाया, किसी के नज़दीक मनुष्य एक विकसित हैवान है जो कुछ ज़रूरतें और कुछ इच्छायें रखता है, वह आज़ाद व स्वतंत्र है और उससे कोई पूछ नहीं सकता, उसकी शक्ति असीमित और उसका अधिकार असीम है, उसके कानून का न कोई इलाही (ईश्वरीय) स्रोत है न उसके ज्ञान का कोई ग़ैबी सरचश्मा (स्रोत)। दुन्या एक रणक्षेत्र है जिसमें असल कानून ताक़त है। अख़लाक़ (आचरण) अच्छा, बुरा, सुन्दर व भद्दा यह सब अर्थहीन शब्द हैं।

खुदा की हस्ती को तस्लीम करने के बाद उसके सिफात (गुणों) के बारे में मीमांसकों व फलसफियों ने जो अनुमान व अन्दाजे लगाये हैं और बाल की खाल निकाली है और जिस तरह उन्होंने खुदा से उन अवगुणों को जोड़ा है जिनको वे स्वयं से जोड़ना भी पसन्द नहीं करते, वह मन व बुद्धि के अजूबों में से हैं।

बाद के प्रश्न अर्थात इस संसार में इन्सान का असली स्थान व प्रतिष्ठा क्या है? उसकी हैसियत व मक़सद का निर्धारण दूसरी मख़लूक़ात और अपने सजातीय से उसकी कार्य विधि का निर्धारण, मातहती और स्वतंत्रता जिम्मेदारी और आज़ादी की बहस, अपनी शक्तियों और जाहिरी मिलकियतों के बारे में उसका ख्याल? यह सब वास्तव में पहले प्रश्नों की परिशिष्टि हैं। और उनके सही हल से यह स्वतः हल हो जाते हैं। जिन लोगों ने प्रारम्भिक प्रश्नों के उत्तर में गलती की और अनुमान से काम लिया इन प्रश्नों के उत्तर में गलती करना और उनके अन्दाजों में विरोधाभाष और संदेह उत्पन्न होना अनिवार्य है।

2. जवाब की दूसरी राह यह है कि इस बारे में किसी दूसरी जमाअत पर भरोसा करें। लेकिन सवाल

यह है कि वह जमाअत कौन सी है? अगर वह मीमांसकों की टोली है तो पूछा जा सकता है कि इन समस्याओं में उनको हमारे मुक़ाबले में कौन सी विशेषता हासिल है और इन मेटाफिजिकल समस्याओं के हल के उनके पास ज्ञान के कौन से साधन हैं? वह मानते हैं कि इन मसलों में न हवास (ज्ञानेन्द्रियां) काम करते हैं? न बुद्धि का कुछ दख्ल है उनको इस ज्ञान की शुरुआती बातें भी हासिल नहीं है, फिर उनको इस बारे में हमारी रहनुमाई करने का क्या हक है और हम उन पर किस तरह भरोसा कर सकते हैं? उनसे यह कहना ठीक ही होगा।

अनुवादः– *''हाँ तुम लोग वही तो हो, जो उस विषय में तो बहस कर चुके हो, जिसका तुम्हें कुछ तो ज्ञान था, तो अब ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो, जिसका तुम्हें ज्ञान ही नहीं? और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (सूरः आले इम्रान–66)*

अब केवल यही रास्ता बाक़ी रह जाता है कि इन समस्याओं में हम कुछ ऐसे इन्सानों पर भरोसा करें जिनका ज्ञान इस बारे में अनुमान वाला न हो बल्कि निश्चित और निर्णायक हो, पक्का हो जिन्होंने इन ज्ञान व वास्तविकताओं को अपने निरीक्षण से इस प्रकार प्राप्त किया हो जिस प्रकार हम को इस संसार की दिखने व सुनने वाली चीजों का ज्ञान होता है, जिनके लिए यह चीजें ऐसे ही बिना दलील व तर्क के स्पष्ट हों जैसे हमारे लिए दुन्या की बहुत सी चीजें होती हैं, जिनमें किसी दलील की ज़रूरत नहीं, स्वतः सिद्ध जिनको संयुक्त इन्सानी ज्ञानेन्द्रियों के अलावा एक ज्ञानेन्द्रीय अधिक मिली हो जिसे हम ''हास्य–ए–ग़ैबी'' (वह ज्ञानेन्द्रीय जिससे ओट की चीज़ों का ज्ञान होता है) कह सकते हैं, जो खुदा से प्रत्यक्ष रूप से उसकी मर्जीयात पसंद और आदेश मालूम कर सकें और दूसरे इन्सानों तक पहुंचा सके। यह सिर्फ पैगम्बरों की जमाअत है। उनकी बेदाग सीरत (जीवन–चरित्र), उनकी बेलाग सदाकत (सच्चाई), उनकी असामान्य व आसाधारण (फौकुलबशरी) युक्ति व न्याय की चमत्कारी शिक्षा इस बात का यक़ीन पैदा कर देती है कि यह एक अलग किस्म के लोग हैं और इनका ज्ञान व सूचना के उस स्रोत से ज़रूर जोड़ है जो इन्सानों की पहुंच से बाहर है। इनके चमत्कारिक गुण व ज्ञान की दलील इसके सिवा नहीं हो सकती कि उनका नबी होना और उनके पास वह्इ (ईशवाणी) का आना तस्लीम किया जाए।

पूर्व वर्णित जमाअतें (हाकिम व फिलास्फर) अपने ज्ञान के यक़ीनी और कतई होने का खुद भी दावा नहीं करतीं, न उनको इस बारे में किसी निरीक्षण का दावा है, उनके कथन व दावों का हासिल बस यह है कि ऐसा होगा, या ऐसा होना चाहिए, या हमारे क़ायम किये हुए मुकदमात (जो यक़ीनी और कतई सबूत वाले नहीं हैं)

हम को इस नतीजे पर पहुंचाते हैं, और वह इसके सिवा कह भी क्या सकते है?

लेकिन पैग़म्बरों को अपने इल्म व ज्ञान के निश्चित व निर्णायक होने का दावा है। वह सिर्फ यही नहीं कहते कि खुदा है या उसकी यह सिफात हैं, बल्कि वह इसके साथ यह भी कहते हैं कि हम उसकी बातें सुनते हैं। हमारे पास उसके फरिश्ते आते हैं। उनके लिए कोई चीज़ उतनी निश्चित नहीं जितनी खुदा की सिफात, उसके आदेश व संदेश और अपनी नबूव्वत व रिसालत। इसलिए उनको एक पल के लिए भी इन सच्चाईयों में कोई संदेह नहीं और किसी के कहने–सुन्ने से उन पर कोई असर नहीं होता।

पैग़म्बर नबूव्वत व रिसालत के उस बुलन्द मक़ाम पर खड़ा होता है, जहां से वह आलमे ग़ैब (गैब की दुन्या) को भी इसी तरह देखता है जिस तरह सामने की चीज़ों को आलमे आखिरत भी उसके सामने इसी तरह होता है जिस तरह यह दुन्या। जो लोग इस बुलन्दी पर नहीं हैं और ज़मीन की पस्ती से उसके मुशाहदात (दिखने वाली चीज़ों) के बारे में उनसे बहस व हुज्जत करते हैं, वह लोगों से इसके सिवा क्या कह सकता है कि मेरी आंखें वह देखती हैं जो तुम नहीं देख सकते, मेरे कानों में वह आवाजें आती हैं जो तुम नहीं सुन सकते, तुम्हारे लिए इसके सिवा चारा नहीं कि मैं अपनी आँखों से देख कर और कानों से सुन कर जो कुछ कहूं तुम उसका यक़ीन करो, तुम्हारी निजात इसी में है।

एक पैग़म्बर से जब उसकी क़ौम ने खुदा और उसकी सिफात के बारे में हुज्जत की तो उसने बड़ी सादगी के साथ अपना और बेदलील बहस करने वालों का फर्क बयान किया:–

अनुवाद– *और उनकी क़ौम उनसे झगड़ने लगी, तो उन्होंने कहा "क्या तुम मुझ से अल्लाह के बारे में झगड़ते हो? जब कि उसने मेरी रहनुमाई (मार्गदर्शन) की है।*

(सूरः अल् अन्आम–80)

एक दूसरे पैगम्बर ने यही फर्क़ इस तरह बयान किया:–

अनुवाद– उन्होंने कहा *"ऐ मेरी क़ौम यह तो बताओ, कि अगर मैं अपने रब की ओर से एक रौशन दलील पर हूं और उसने अपनी विशेष कृपा से मुझे सम्मानित किया हो, मगर वह तुम्हें दिखाई न दे रही हो, तो क्या यह जबर्दस्ती तुम्हारे सर चिपका दे और जब कि वह तुम्हें अप्रिय है। (सूरः हूद–21)*

एक तीसरे पैगम्बर के सम्बन्ध में यूं कहा गया:–

अनुवाद– *" और न वह अपनी इच्छा से बोलते हैं। यह तो बस एक वह्इ (ईशवाणी) है, जो वह्इ की जा रही है।*

(सूरः अंनज्म 3–4)

इसी निरीक्षण के बारे में कहा गया है:–

अनुवाद– *"न उसकी निगाह बहकी और न हद से आगे बढ़ी, उन्होंने अपने रब की बड़ी–बड़ी निशानियां देखीं। रसूल के दिल*

ने झूठ नहीं कहा जो कुछ कि देखा, क्या तुम इसमें झगड़ते हो उस सम्बन्ध में जो कुछ वह देखता है। (सूरःअंनज्म 17–18)

इस यकीन और निरीक्षण के मुकाबले में जो कुछ है उसकी हक़ीक़त सुन लीजियेः–

एक दूसरे पैगम्बर ने यही फर्क़ इस तरह बयान कियाः–

अनुवाद– *''वे लोग तो केवल गुमान और मन की इच्छा के पीछे चल रहे हैं। हालांकि उनके पास उनके 'रब' की ओर से हिदायत (सत्य मार्गदर्शन) आ चुकी है। सूरःअंनज्म 23)*

अनुवाद– *''और उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं, वे केवल अटकल के पीछे चल रहे हैं और कयास वास्तविकता का स्थान नहीं ले सकता। सूरःअंनज्म 23)*

..... जारी..... ❖❖

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही" की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

कुर्बानी का बकरा.....

और वह जानवर जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो और वह जो घुट कर या चोट खा कर या ऊचाई से गिर कर या सींग लगने से मरा हो या जिसे किसी हिंसक पशु ने फाड़ खाया हो सिवाय उसके जिसे तुम ने (जिन्दा पा कर) ज़ब्ह कर लिया हो और वह जो किसी स्थान पर ज़ब्ह किया गया हो''।

और सूरे अल– अनआम की आयत 121 में बताया गयाः– *''और उसे न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो''।*

सूरे ता0हा0 आयत नं0 54 में हैः–

''अपने चौपायों को खाओ और उनको चराओ''

कुर्बानी के विषय में बताते हुए सूरे अल–हज की आयत नं0 28 में आया हैः–

''और कुछ ज्ञात और निश्चित दिनों में उन चौपायों अर्थात मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें, जो उसने उन्हें दिए हैं। अर्थात उन मवेशियों को अल्लाह का नाम ले कर ज़ब्ह करें, फिर उसमें से स्वयं भी खाओ और तंगहाल मुहताज को भी खिलाओ''।

कुर्बानी का आदेश सूरे अल–कौसर में भी है फरमायाः– *''अतः तुम अपने रब ही के लिए नमाज़ पढ़ो और उसके लिए कुर्बानी करो''।*

सूरे या0सीन0 आयत नं0 71,72 में आया हैः–

''क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम ने उन के लिए अपने हाथों की बनाई हुई चीजों में से चौपाए पैदा किए और अब वे उनके मालिक हैं, और उन्हें उनके बस में कर दिया कि उन में से कुछ तो उनकी सवारियां हैं और उन में कुछ को वे खाते हैं''।

और भी आयतें हैं पर हम इन्हीं को प्रयाप्त समझते हैं। पोते ने कहा दादा मैंने यह आयतें कई बार पढ़ीं पर इस तरह ध्यान न दे सका आज मेरी आंखें खुल गईं, वतनी भाई तो कुर्आन को मानते नहीं वह इस तर्क से कहां संतुष्ट हो सकते हैं उनको तो बौद्धिक तर्कों ही से संतुष्ट किया जा सकेगा। अलबत्ता इन तर्कों से मुझे खूब इत्मीनान हासिल हुआ।

❖❖❖

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी

—अनुवादः अतहर हुसैन

दूसरे ख़लीफा
हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 का शासन काल

सम्बन्धियों को देने में कमीः–

आप ने केवल यही नहीं किया कि अपने कुटुम्ब वालों को हुकूमत के मदों से अलग रखा बल्कि यह भी उचित न समझा कि उन्हें साधारण उपहार में भी दूसरों पर श्रेष्ठता हो, श्रेष्ठता तो बड़ी बात है, आपकी स्वाधीनता की यह दशा थी कि उपहार तथा दान के समस्त अवसरों पर अपने घर वालों को दूसरों के मुकाबले में पीछे रखते। ईरान की राजधानी मदायन पर जब विजय प्राप्त हुई तो बहुत सा धन मदीने आया। आपने यह धन तमाम मुसलमानों में बांट दिया। इस अवसर पर हज़रत हसन तथा हज़रत हुसैन को एक–एक सहस्र दिर्हम प्रदान किया, लेकिन अपने पुत्र अब्दुल्लाह को केवल पांच सौ ही दिये। इस भेदभाव को देख कर हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 ने पिता से प्रार्थना कि ''आप मुझे उन लोगों से कम क्यों दे रहे हैं? मेरी सेवाएं इन लोगों से कम नहीं है बलिक अधिक ही हैं। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन काल में मैंने इनकी अपेक्षा इस्लाम की अधिक सेवा की है, यह दोनों तो उस समय बच्चे थे। यह न तो युद्ध कर सकते थे और न कोई कठिन कार्य ही कर सकते थे, परन्तु मैं युवावस्था को पहुंच चुका था। युद्ध के समय बढ़–चढ़ कर भाग लेता था, फिर क्या कारण है कि मुझे इन लोगों से कम हिस्सा दिया जा रहा है?'' हज़रत उमर रज़ि0 ने उनकी यह बात सुनी और कहा ''यह सब ठीक है लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इनका जो सम्बन्ध है वह तुम्हारा नहीं''।

इसी प्रकार वजीफा देते समय हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 की अपेक्षा हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 का वज़ीफ़ा कम दिया। अतः हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 ने आपका ध्यान इस कमी की ओर आकर्षित किया, तो हज़रत उमर रज़ि0 बोले कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत उसामा रज़ि0 को तुम से बहुत प्रिय रखते थे। इस बारे में आपकी स्वाधीनता की यह दशा थी कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 का वज़ीफ़ा साधारण मुहाजिरों से भी कम दिया। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि0 ने फिर कहा कि मैं मक्का से हिज़रत कर के मदीना मुनव्वरा आया हूं। आखिर क्या कारण है कि दूसरे मुहाजिरों से भी मुझे कम दिया जा रहा है?

उनके इस निवेदन के उत्तर में हज़रत उमर रज़ि0 ने कहा कि ''तुम में तथा अन्य मुहाजिरों में अन्तर है। वह लोग स्वयं हिजरत करके आये थे और तुम लोग मेरे साथ आये थे, अतः वास्तव में न्याय यही कहता है कि जो स्वयं आया उसे उसके मुक़ाबले में प्रधानता दी जाये जिसने अपने पिता के अनुसरण में हिज़रत की''।

कुटुम्बियों के लिए दोहरे दण्ड की घोषणाः-

अपने कुटुम्बियों को निरंतर सचेत करते रहते थे कि वे कानून का उल्लंघन करने में बहुत सावधानी बरतें, नहीं तो उन्हें दूसरों की अपेक्षा अधिक दण्ड मिलेगा। किसी क़ानून को लागू करना चाहते या किसी बात के निषेध होने की घोषणा करते तो उसके बाद घर आ कर अपने सगे-सम्बन्धियों को एकत्र करते और उनसे कहते ''मैंने लोगों को अमुक-अमुक बातों से बचने का निर्देश दिया है। देखो, सावधान् तुम इन मना की हुई बातों के निकट न जाना, लोग तुम्हारी ओर इस प्रकार देख रहे हैं कि जैसे शिकारी पक्षी मांस पर दृष्टि डाले रहते हैं, अगर उन्हें कहीं दूर से तनिक भी मांस का अंश दिखाई देता है तो वे उस पर टूट पड़ते हैं, बिल्कुल ऐसे ही लोग तुम पर निगाह गाड़े हुए हैं और इस अवसर की ताक में हैं कि तुम से गल्ती हो तो उसे आधार बना कर वह भी आदेशों का उल्लंघन करना आरम्भ कर दें। सावधान यदि तुम ने ज़रा भी ग़लती की तो तुम्हें कठोर दण्ड मिलेगा और दूसरों की अपेक्षा तुम्हें दोहरी सज़ा दी जायेगी''।

बहुत मामूली लाभ से भी बचनाः-

एहतियात की यह दशा थी कि ऐसी साधारण वस्तुओं से बहुत दूर रहते थे जिनको प्रयोग करने में सामान्य रूप से कोई हर्ज न मालूम होता था। इस विषय में अपने बाल-बच्चों का बहुत सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करते थे। एक बार बहरेन की आय में कस्तूरी तथा अम्बर भी पर्याप्त मात्रा में था। उसे राजकोष में दाख़िल करने से पूर्व तौलना आवश्यक था ताकि रजिस्टर में सही सही नोट किया जा सके। आपकी पत्नी ने तराजू ले कर तौलने का इरादा किया परन्तु आपने उन्हें ऐसा करने की आज्ञा न दी और कहा कि तुम जब इसे तौलोगी तो तुम्हारे हाथों में अवश्य लगेगा इससे कपड़े सुगन्धित हो जायेंगे जिसका परिणाम यह होगा कि साधारणतया अन्य मुसलमानों की अपेक्षा तुम्हारा भाग अधिक हो जायेगा और यह मैं किसी प्रकार भी उचित नहीं समझता।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत

–मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0

–हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहा–बए–किराम रज़ि0 का इश्क़े नमाज़ः–

इस मक़ाले में नमाज़ से मुतअल्लिक़ जिन उसूली बातों के ज़िक्र का इरादा किया गया था, अलहम्दुलिल्लाह, कलम उन की तहरीर से फारिग हो चुका, अब आखिर में मुनासिब मालूम होता है कि नमाज़ के साथ आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहा–बए–किराम को जो इश्क़ व शगफ था और नमाज़ों में उन की जो हालत और कैफीयत हुआ करती थी, उसकी भी कुछ झलक इन औराक़ में दिखाई जाए, क्या अजब कि यहां तक की तरगीब व तरहीब से भी जिन दिलों पर कोई असर न हुआ हो, मक़्बूलीन के अहवाल का तज़किरा उन को भी मुतअस्सिर कर सके, कहते हैं कि कौल से ज़ियादा तासीर व ताक़त सादिक़ीन के अहवाल व कैफीयात में होती है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ के साथ जो तअल्लुके खातिर था और क़ल्बे मुबारक और रूहे मुनव्वर को जो खास कैफीयत नमाज़ में हासिल होती थी उस का बहुत कुछ अन्दाज़ा आपके मशहूर इर्शाद ''मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में हैं'' से किया जा सकता है, नीज़ अहादीस में है कि जब नमाज़ का वक़्त करीब होता तो आप हज़रत बिलाल रज़ि0 से इरशाद फरमाते ''बिलाल उठो नमाज़ का बन्दोबस्त कर के मेरे दिल को चैन व आराम पहुंचाओ'' हज़रत बिलाल रज़ि0 से आप का यह फरमाना इसलिए था कि वह मस्जिदे नबवी के मुअज़्ज़िन होने के अलावा आज कल की इस्तिलाह में गोया मुहतमिमे जमाअत भी थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इश्के नमाज़ का इस से भी ज़ियादा वाज़ेह अन्दाज़ इस वाकेआ से होता है कि क़ब्ल अज़ हिजरत, ताइफ में आप को जब लरज़ा खेज़ ईज़ाएं पहुंचाई गईं, और इसी तरह जब गज़–वए–उहुद वगैरा में दुश्मनों के हाथ से आप सख्त ज़ख्मी हुए तो दूसरों के दरख्वास्त करने पर भी आप ने उनके हक़ में बद दुआ नहीं फरमाई, बल्कि उनकी हिदायत और अंजाम बखैर ही के वास्ते दुआ की, लेकिन गज़–वए–अहज़ाब में जब दुश्मनों ने एक दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अस्र की नमाज़ पढ़ने की मुहलत न दी और आप की वह नमाज़ क़ज़ा हो गई तो इतनी सख्त बद दुआ ज़बाने मुबारक से निकली कि ऐसी बद दुआ किसी दूसरे मौके पर किसी बड़े से बड़े तकलीफ पहुंचाने वाले के हक़ में भी आपने नहीं फरमाई होगी, हदीस में है, आपने फरमाया ''इन लोगों ने मुझे अस्र की नमाज़

नहीं पढ़ने दी, अल्लाह इनके घरों और इन की कब्रों को आग से भर दे''।

और मुतअद्दिद रिवायात में आया है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को इस कदर नमाज़ पढ़ते थे कि पांव पर वरम आ जाता था, जाहिर है कि नमाज़ के साथ किसी खास इश्क़ व शगफ का ही नतीजा था।

नीज़ चन्द सहा–बए–किराम रज़ि0 से मरवी है कि उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रात में इस तरह से नवाफिल पढ़ते देखा कि पहली रकअ़त में पूरी सूरे बकरा पढ़ी और वह भी इस तरह कि जहां रहमत की कोई आयत आती वहां आप ठहर कर अल्लाह तआला से रहमत की दुआ करते, और जहां कोई कह्र व अज़ाब की आयत आती तो ठहर कर उससे पनाह मांगते, फिर आप ने इस तवील कियाम के ब कदर ही तवील रुकूअ़ किया और फिर इसी कदर लम्बा सज्दा किया, फिर दूसरी रकअ़त में इसी तरह सूरे आले इमरान पढ़ी और फिर तीसरी और चौथी रकअ़त में सूरे निसा, और सूरे माइदा पढ़ी, गोया इस तरह चार रकअ़तों में आप ने सवा छे पारे पढ़े, और मालूम है कि आप की किराअत हमेशा तरतील से होती थी, और जैसा कि गुजरा, इस नमाज़ में रहमत व अजाब की आयतों पर ठहर ठहर कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला से दुआ भी करते थे, फिर हर रकअ़त के रुकूअ़ व सज्दे भी कियाम की तरह तवील होते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ की यह कैफीयत दर अस्ल इसी ''नमाज़ में मेरी आंखों और मेरे बातिन की ठन्डक है'' हालत का एक जाहिरी करिश्मा था।

काश! अल्लाह तआ़ला हम महरूमों को भी इस का कोई जर्रा नसीब फरमा दे।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 और उनके नवासे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि0 के मुतअल्लिक़ मन्कूल है कि जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो ऐसे बे हिस व हरकत हो जाते थे कि गोया एक लकड़ी है जो ज़मीन में गाड़ दी गई है।

हजरत उमर फारूक़ रज़ि0 को जब खंजर से ज़ख्मी किया गया था, तो एक वक़्त आप पर गशी की सी कैफीयत तारी थी, इस हालत में किसी ने आप को नमाज़ पढ़ना याद दिलाया तो आप ने फरमाया ''हां! नमाज़ ज़रूर पढ़नी है जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी उसका इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं'' फिर आप ने इसी हालत में नमाज़ अदा की, और आप के ज़ख्म से खून का गोया फव्वारा जारी था, और मौके पर बाज़ किताबों में हज़रत फारूक़े आज़म रज़ि0 से यह दर्द अंगेज़ और हसरत आमेज़ अल्फाज़ भी नक्ल किए गए हैं ''जब मैं नमाज़ पढ़ने से भी आजिज़ हो गया हूं तो जिन्दा रहने में कोई लुत्फ नहीं।

एक गज़वे का वाकिआ़ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खतरे

के मौके पर रात को पहरा देने के वास्ते दो सहाबियों को मुतअ़य्यन फरमाया, उनमें से एक मुहाजिर थे और दूसरे अंसारी, इन सहाबियों ने ड्यूटी को निस्फ़ निस्फ़ तक़्सीम कर लिया, यानी तै किया कि हर एक आधी आधी रात पहरा दे, और दूसरा उस वक़्त सोए, इस तक़्सीम के मुताबिक़ अंसारी सहाबी ने रात के पहले हिस्से में पहरा देना शुरुअ किया, और मुहाजिर साथी सो गये, फिर इन अंसारी बुजुर्ग ने बजाए खाली जागने के यह बेहतर समझा कि नमाज़ में मशगूल रह कर यह वक़्त गुजारा जाए, चुनांचे उन्होंने नमाज़ शुरुअ़ कर दी, दुश्मन की जानिब से कोई शख्स आया और उसने आदमी खड़ा देख कर तीर मारा, जब यहां कोई हरकत न हुई और न कोई आवाज़ निकली तो यह समझ कर कि निशाना खता कर गया, दूसरा और तीसरा तीर मारा, और यहां तक कि तीर उनके जिस्म में पैवस्त हो रहा यह उसको निकाल निकाल कर फेंकते रहे और नमाज़ में मशगूल रहे फिर सज्दे किये और नमाज़ पूरी करके मुहाजिर साथी को जगाया, उन्होंने उठ कर देखा कि एक छोड़ तीन तीन जगह से खून जारी है, उन्होंने माजरा पूछा और कहा कि तुम ने मुझे शुरुअ़ ही में क्यों न जगा दिया? इन अंसारी बुजुर्ग ने जवाब दिया कि मैं ने नमाज़ में एक सूरत (सूरः कहफ्) शुरुअ़ कर रखी थी, मेरा दिल न चाहा कि उसको खत्म करने से पहले रुकूअ़ करूं लेकिन फिर मुझे खतरा हुआ कि अगर इसी तरह पै दर पै तीर लगते रहे और मैं मर गया तो हुजूर ने पहरेदारी की जो खिदमत मेरे सुपुर्द की है वह फौत हो जाएगी, इस खयाल से मैंने रुकूअ़ कर दिया, अगर यह अन्देशा न होता तो सूरे खत्म करने से पहले रुकूअ़ न करता अगरचे मैं मर ही क्यों न जाता।

हज़रत अबू तलहा अंसारी रज़ि0 का मशहूर वाक़िआ है कि एक दिन यह अपने बाग में नमाज़ पढ़ रहे थे, एक परिन्दा उड़ा और कुछ देर तक बाग में चक्कर लगाता रहा, उन की निगाह उस पर पड़ी और उसके साथ तैरती रही, खयाल के इस तरह बट जाने की वजह से नमाज़ में सहव हो गया, याद न रहा कि कौन सी रकअ़त है, फौरन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुए और अर्ज़ किया कि मेरी नमाज़ में यह खलल इस बाग ही कि वजह से पड़ा है, मैं अब इस को अपनी मिल्क से निकालता हूं और राहे खुदा में देता हूं, जिस मद में भी आप मुनासिब समझें इस को लगा दें, कुतुबे सियर से मालूम होता है कि हज़रत अबू तल्हा रज़ि0 का यह बाग कई लाख दिरहम की मालीयत का था।

इसी तरह एक वाकिया एक दूसरे अंसारी सहाबी का भी है हज़रत उस्मान रज़ि0 के अहदे खिलाफत में पेश आया था वह एक दिन अपने बाग में नमाज़ पढ़ रहे थे खजूरों के पकने का खास मौसम था, और ख़ोशे

खजूरों के बोझ से झुके पड़ रहे थे उनकी निगाह खोशों पर पड़ी और वह मंजर उन को भला मालूम हुआ, खयाल के उधर लग जाने से उनको भी सहव हो गया और याद नहीं रहा कि कितनी रक्अत पढ़ चुके हैं, नमाज़ में बस इतना सा खलल आ जाने से उन्हें इस कदर सदमा हुआ कि उसी वक़्त तै कर लिया कि इस बाग को अपने पास न रखूंगा, चुनांचे हज़रत उस्मान रज़ि0 की खिदमत में हाजिर हुए और माजरा जाहिर करके अर्ज किया कि मैं इस को राहे खुदा में खर्च करना चाहता हूं, अब यह आपके हवाले है इसका जो चाहें करें और जहां चाहें लगा दें, चुनांचे उन्होंने 50 हज़ार दिरहम में उसको फरोख्त करके उस की क़ीमत दीनी कामों में सर्फ फरमा दी।

हज़रत खुबैब रज़ि0 का मशहूर वाक़िआ है जब वह काफिरों के हाथों गिरफ्तार हो गये और एक मुद्दत तक कैद में रखने के बाद क़त्ल करने के वास्ते उन को मक़्तल में लाया गया तो सूली पर चढ़ाने से क़ब्ल उनसे पूछा गया कि तुम्हारी अगर कोई खास तमन्ना हो तो कहो, उन्होंने कहा कि हां एक तमन्ना है अगर तुम पूरी कर सको और सिर्फ यह है कि दुन्या से जाने का वक़्त है और अल्लाह के दरबार की हाजिरी करीब है अगर तुम मुहलत दो तो दो रकअ़त नमाज़ पढ़ लूं, चुनांचे मुहलत दी गई और उन्होंने बड़े इत्मिनान और कामिल खुशूअ़ के साथ दो रकअत नमाज़ अदा की और फरमाया कि अगर मुझे यह खयाल न होता कि तुम लोग समझोगे कि मौत के डर से देर करना चाहता है तो दो रकअत और पढ़ता, इसके बाद वह सूली पर लटका दिये गये, रजियल्लाहु अन्हु।

यह तो वह बरगुज़ीदा हस्तियां थीं जिन्होंने बराहे रास्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फैज़ हासिल किया था, और दूसरी दीनी व रूहानी कैफीयात की तरह ही हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की "मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में है" की कैफीयत को ही अपने बातिन में उतार लिया था, इसलिए उनका यह हाल होना ही चाहिए था लेकिन बाद के ज़माने में भी बहुत से अल्लाह के बन्दे ऐसे गुज़रे हैं जो नमाज़ के साथ इसी तरह का इश्क़ व शगफ रखते थे।

जारी.....

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा .....

मरयम को खुदाई में साझीदार बनाने वाले सुन लें सब अल्लाह के बन्दे हैं वह जो चाहे करे उससे कोई पूछने वाला नहीं और सबसे सवाल होगा सब बादशाही अल्लाह की है वह जिस तरह जिसको चाहे पैदा करे, आदम को बिना मां बाप के हव्वा को बिना मां के और ईसा को बिना बाप के पैदा किया तो यह उस माहन व शक्तिमान की शक्ति है जिसके आगे सब झुके हुए हैं।

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

क़ुर्बानी (बलिदान)

हम तो हैं अल्लाह के बन्दे, उसी की पूजा करते हैं
उसी के आगे सर हैं झुकाते, उसी से मांगा करते हैं
सूद न खाओ, घूस न खाओ, चोरी का तुम माल न खाओ
उस के जब आदेश सुनो यह, इन से सदा हम बचते हैं
हलालो तय्यिब रोज़ी खाओ, उसने है आदेश दिया
हलालो तय्यिब सदा हैं खाते, हुक्म पे उसके चलते हैं
अमुक जानवर ज़ब्ह किया तो मांस भी उस का हुआ हलाल
मांस ज़बीहे का ही हम, सदा ही खाया करते हैं
ईदे अज़्हा में है रब ने, हुक्म दिया क़ुर्बानी का
ईद में हम क़ुर्बानी करके गोश्त भी खाया करते हैं
रब के सब आदेश तो हम ने, प्यारे नबी से पाए हैं
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पे पढ़ा हम करते हैं

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर?

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः इस्लामी शरीअत में कुर्बानी की क्या हैसीयत है?

उत्तरः हर मुक़ीम (जो सफर पर न हो) मुसलमान मर्द या औरत जिस के पास दो सौ दिरहम यानी 612 ग्राम चांदी हो या 612 ग्राम चांदी खरीदने के पैसे हों या जरूरी और इस्तेमाली अशया के सिवा 612 ग्राम चांदी की मालीयत के बकद्र माल मौजूद हो तो इस्लामी शरीअत में उस पर कुर्बानी वाजिब है, बसूरत दीगर उस पर कुर्बानी वाजिब नहीं है वह नफ्ल कुर्बानी कर सकता है।

(फतावा खानियाः 3/242)

प्रश्नः इस्लाम में कुर्बानी वाजिब होने की क्या क्या शरतें हैं?

उत्तरः इस्लामी शरीअत में कुर्बानी किसी शख्स पर उसी वक्त वाजिब होती है जब वह कुर्बानी के दिनों में मुसलमान हो, मुक़ीम हो और 612 ग्राम चांदी का मालिक हो या उसके पास 612 ग्राम चांदी खरीदने के नक़्द पैसे हों या घरेलू और इस्तेमाली चीज़ों के अलावा 612 ग्राम चांदी के बकद्र मालीयत के सामान का मालिक हो।

(फतावा हिन्दियाः /336)

प्रश्नः इस्लाम में कुर्बानी का वक़्त कब से कब तक है?

उत्तरः इस्लाम में कुर्बानी का वक़्त तीन दिन है, 10 जिल्हिज्ज को ईद की नमाज़ के बाद से 12 जिल्हिज्ज को सूरज डूबने से पहले तक, अल्बत्ता जिन देहातों में ईद की नमाज़ नहीं होती वहां सूरज निकल आने के बाद भी कुर्बानी हो सकती है, लेकिन अब ऐसे देहात मुश्किल ही से मिलेंगे।

(बदाए सनाएः 4/198)

प्रश्नः इस्लामी शरीअत में किन जानवरों की कुर्बानी जाइज़ है?

उत्तरः इस्लाम में पाँच किस्म के जानवरों की कुर्बानी जाइज़ है, ऊँट, गाय, भैंस, बकरी, और भेड़ लेकिन इन जानवरों की कुर्बानी उसी वक़्त दुरुस्त होगी जब कि उन की मुकर्ररा उमरें पूरी हो गई हों, और वह दांत गए हों, गाय या भैंस की उम्र दो साल और भेड़, बकरी की उम्र एक साल मुकर्रर है, कुर्बानी का जानवर बे ऐब होना चाहिए और जानवर सहीह व सालिम हो।

(बदाए सनाएः4/215)

याद रहे हमारे मुल्क के जिन सूबों में गाय का ज़बीहा कानूनन मना है वहां गाय की कुर्बानी न की जाए।

प्रश्नः हमारे मुल्क हिन्दोस्तान के मौजूदा हालात में जब कि फिर्क़ा प्रस्तों का बोलबाला है, और मुआशरा तशद्दुद व अदमें रवादारी की तरफ जा रहा है, हिन्दू एहयाइयत की राह हमवार की जा रही है, खास तौर से गाय के ज़बीहे पर पाबन्दी के कानून के अलावा तशद्दुद पसन्दों ने मुसलमानों को आज़माइश में डाल दिया है, इस तनाज़ुर में यह सुवालात सामने आ रहे हैंः

(1) क्या मौजूदा सूरते हाल में गाय की कुर्बानी दुरुस्त है?

(2) अगर बड़े या छोटे जानवरों की कुर्बानी एहतियातन

न कर के कुर्बानी की क़ीमतें सद्क़ा कर दी जाएं तो क्या शरअ़न इसकी इजाज़त है?

उत्तरः हलाल घरेलू जानवर खास तौर से गाय की कुर्बानी इस्लाम में जाइज़ है क़ानूनी बन्दिश या माहौल की खराबी की वजह से गाय की कुर्बानी दुशवार हो तो दूसरे जानवर की कुर्बानी की कोशिश की जाए, लेकिन वह भी दुशवार हो जाए और कुर्बानी न की जा सके और कुर्बानी के दिन भी गुज़र जाएं तो इस सूरत में कुर्बानी की जगह उसके बकद्र रक़म सद्क़ा करना वाजिब है, लेकिन बगैर कुर्बानी करने की कोशिश के शुरुअ ही से एहतियातन कुर्बानी न करना और उसकी क़ीमत सद्क़ा करना दुरुस्त नहीं है।

(फतावा हिन्दियाः 293–294)

प्रश्नः अगर कोई शख्स है मुर्दों की तरफ से कुर्बानी करे तो उसका गोश्त खुद खा सकता है या नहीं? या गुरबा में तक़्सीम करना जरूरी है?

उत्तरः अगर मुर्दा वसीयत करके मरा हो तो ऐसी कुर्बानी का गोश्त फ़ुक़रा व मसाकीन पर सद्क़ा करना लाज़िम है खुद नहीं खा सकते और न मालदारों को दे सकते हैं, हां अगर खुद मुहताज व फक़ीर हों तो खाने में कोई हरज नहीं, अलबत्ता अगर मुर्दे के माल से कुर्बानी नहीं की बल्कि अपने माल से की है चाहे मुर्दे की वसीयत की बिना पर की हो तो खुद गोश्त खा सकते हैं और अपनी सवाब दीद से दूसरों को भी दे सकते हैं।

(रद्दुल मुहतारः 2/326)

प्रश्नः जिसके पास वुसअ़त हो उसके बावजूद वह कुर्बानी न करे तो क्या सिर्फ वह सवाब से महरूम रहेगा और कुर्बानी की फज़ीलत उसको हासिल नहीं होगी या उस पर गुनाह भी होगा?

उत्तरः इस्तिताअत के बावजूद कुर्बानी न करने पर सिर्फ उसके सवाब से महरूमी ही न होगी बल्कि गुनाह भी होगा, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि वुसअ़त के बावजूद जो कुर्बानी न करे वह हमारी ईदगाह के क़रीब न आए। (मिश्कातः 1/127) मतलब यह है कि ऐसे शख्स को ईद की नमाज़ में शिर्कत का हक़ नहीं, जिसमें अल्लाह की रहमतें नाज़िल होती हैं।

प्रश्नः कुर्बानी के दिनों में बाज़ मदरसे पड़वे की कुर्बानी का नज़्म करते हैं हिस्सों की क़ीमत का एलान कर देते हैं, लोग हिस्से ले ले कर वहां कुर्बानी करवाते हैं लेकिन कुर्बानी की खाल मदरसे वाले अज़ खुद अपने मदरसे के लिए ले लेते हैं हिस्सा लेने वाले से मुतालबा नहीं करते कि अपने हिस्से की खाल मदरसे को दे दो, न ही हिस्से लेने वाले अपनी तरफ से कहते हैं कि मेरे हिस्से की खाल मदरसे को हद्या है इस अमल में कोई क़बाहत तो नहीं है?

उत्तरः कुर्बानी कराने वाले और मदरसे वाले दोनों यह जानते हैं कि खाल इन्तिज़ाम करने वाले इदारे की तहवील में आ जाती है, यह आम उर्फ है और उर्फे आम सराहत के क़ाइम मुक़ाम है इसलिए मदरसे वालों का खाल रख लेने में कोई क़बाहत नहीं है ताहम अगर कुर्बानी करने वाले सराहत

करें तो ज़ियादा बेहतर है।

प्रश्नः तलाक़ किस को कहते हैं, और उसके इस्तेमाल का बेहतर तरीक़ा क्या है?

उत्तरः मखसूस अल्फाज़ में से किसी लफ़्ज़ के जरिये निकाह खत्म करने का नाम तलाक़ है। (दुर्रे मुखतारः 2/415) तलाक देने की जरूरत पड़ जाए तो उसका बेहतर तरीक़ा यह है कि पाकी की हालत में जब कि बीवी से क़ुर्बत न हुई हो, सिर्फ एक तलाक़ दे कर छोड़ दे यहां तक कि इद्दत गुजर जाए, अल्लाह के नबी के सहाबा रज़ि0 इसी तरीक़े को पसन्द फरमाते थे।

(तातार खानियाः 4/378)

आज कल हमारे हिन्दोस्तान में तीन तलाक़ देने को ही तलाक़ समझते हैं हालांकि यह तरीक़ा शरीअत में नापसन्दीदा बलिक मम्नूअ़ है और नुक्सानदेह भी।

प्रश्नः पाकी की हालत से क्या मुराद है?

उत्तरः दो हैजों (मासिक धर्मों) के बीच का जमाना पाकी की हालत या तुहर का जमाना कहलाता है।

प्रश्नः अगर पाकी की हालत के अलावा हैज की हालत में कोई तालक़ दे तो तलाक़ पड़ेगी या नहीं?

उत्तरः हैज की हालत में तलाक़ दे या हम्ल की हालत में तलाक़ दे तलाक़ पड़ जाएगी।

प्रश्नः मुतल्लका (तलाक़ पाई हुई औरत) की इद्दत क्या है?

उत्तरः मुतल्लका अगर हामिला है तो बच्चा पैदा होने तक उसकी इद्दत है, अगर उस को हैज़ आता है तो तीन बार हैज आना उसकी इद्दत है, अगर इस को हैज़ नहीं आता है तो तीन महीने उसकी इद्दत है।

प्रश्नः तलाक़ का इख्तियार मर्दों ही को क्यों दिया गया, औरतों को यह हक़ क्यों नहीं?

उत्तरः इस्लाम ने तलाक़ का इख्तियार मर्दों को दिया है, जिस में बड़ी हिकमतें हैं, उन में से एक हिक्मत जो कानूनी भी है, यह है कि निकाह की बुन्याद पर जो माली जिम्मेदारियां आइद हुआ करती हैं, इस्लाम ने इन जिम्मेदारियों को मर्दों के सर रखा है, जिसका तक़ाज़ा है कि मुआहदा के जिस फरीक़ पर जिम्मेदारियों का बोझ रखा गया हो उसी को मुआहदा खत्म करने का इख्तियार भी हासिल हो, दूसरी हिक्मत यह है कि अस्ल में इस्लाम ने इस कानून के जरिये औरतों को तहफ्फुज़ फराहम किया है कि कुदरती तौर पर मुआह–दए–निकाह के दो फरीक़ (मर्द व औरत) में खिल्की एतिबार से मर्द को कूवत व गल्बा हासिल है, अब अगर मर्द को तलाक़ दे कर नजात पाने का मौक़ा हासलि न हो तो नतीजतन वह जुल्म का गैर क़ानूनी रास्ता इखतियार करेगा, और अदालत की तग व दौ के बजाए वह चाहेगा कि औरत ही को अपने रास्ते से हटा दे हमारे हिन्दोस्तानी मुआशरे में यह देखा भी जाता है कि जहां छुटकारे की गुंजाइश न हो वहां औरतों के क़त्ल और नज़्रे आतिश करने के वाकिआत पेश आते हैं, एक तीसरी हिक्मत यह भी है कि औरत जज़्बाती और जल्दबाज़ वाके हुई है जो उसके लिए ऐब नहीं बल्कि

शेष पृष्ठ....30 पर..

मछली वाले नबी हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

अल्लाह तआला ने अपनी सृष्टि में मानव जाति को सर्वश्रेष्ठ बनाया है, अल्लाह तआला ने मानव जाति तथा जिन्नातों को इस धरती पर परीक्षा हेतु पैदा किया है यदि वह भले काम करेंगे तो उन को पुरस्कृत किया जाएगा और अगर वह बुरे काम करेंगे तो उन को दण्ड दिया जाएगा, यह पुरस्कार तथा दण्ड क़ियामत के पश्चात जन्नत और जहन्नम में मिलेंगे, जन्नत में केवल सुख होगा ऐसा सुख कि उस की कल्पना असंभव है वहां सब से बड़ा पुरस्कार यह होगा कि वहां अल्लाह के दर्शन होंगे और जहन्नम में आग होगी, कष्ट ही कष्ट होगा ऐसा कष्ट जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती वहां मौत नहीं है।

मानव जाति को भला बुरा बताने के लिए अल्लाह ने उन्हीं में से कुछ को पैगम्बर नबी अर्थात संदेष्टा नियुक्त किया और उनके द्वारा भले बुरे काम और अपने आदेश मानव जाति को पहुंचाये, सब से पहले पैगम्बर (नबी) आदम अलैहिस्सलाम हैं वही पहले मानव भी हैं और सबसे अन्त में अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं वही सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हैं उन के पश्चात कियामत तक कोई नबी न आएगा कियामत के क़रीब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से उतारे जाएंगे वह तो पहले से नबी होंगे, आदम अलै0 और अन्तिम नबी के बीच में अल्लाह तआ़ला ने अपनी पसन्द के काम बताने के लिए अनगिनत नबी भेजे जिन की गिनती अल्लाह ही को मालूम है अल्लाह तआला ने अपने अन्तिम नबी से कहा उनमें से कुछ आप को बताए हैं और कुछ नहीं बताए। (अल मोमिनः 78) उन नबियों में से कुछ का उल्लेख पवित्र कुर्आन में है उन्हीं में एक नबी हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम हैं। अल्लाह तआला के आदेश से कौम को बताया कि ऐ कौम तुम लोग कुफ्र नहीं छोड़ रहे हो तो सुन लो कि फुलां दिन तुम पर अल्लाह का अज़ाब आएगा, और दिन नियुक्त कर दिया और स्वयं अपनी बीवी और दो बच्चों को साथ ले कर बस्ती से चल दिए ताकि वह अज़ाब वालों में न रहें, आगे चल कर तेज धारे वाली गहरी नदी मिली आप ने चाहा कि वह अपने घर वालों के पास तैर कर नदी पार करें इस लिए कि वहां कोई नाव न थी, अतः छोटे बच्चे को नदी के किनारे बैठा कर बड़े बच्चे और बीवी को ले कर नदी में उतर गए कि उन को पार करा के छोटे बच्चे को ले जाएंगे लेकिन अल्लाह की मर्जी बीच धारा में पहुंचे तो बीवी और बड़ा बच्चा दोनों बह गए दुखी हो कर वापस लौटे तो देखा छोटे बच्चे को भेड़िया ले कर भाग गया। बहुत दुखी हुए परन्तु कौम की ओर न लौटे कि वहां अल्लाह का अज़ाब आने वाला था। इतने में एक नाव दिखी जो सवारियों से भरी हुई थी, नाव वाले ने

हज़रत यूनुस को नाव में चढ़ा लिया जब नाव बीच में पहुंची तो डगमगाने लगी लगा कि डूब जाएगी, नाव वाले ने कहा ऐसा उसी वक्त होता है जब नाव में अपने मालिक से भागा हुआ कोई गुलाम होता है जब तक वह गुलाम नदी में फेक न दिया जाएगा। नाव डूबने से बच न सकेगी। हज़रत यूनुस ने कहा मैं अपने मालिक से भागा हुआ गुलाम हूं मुझे नदी में फेंक दो और नाव बचा लो नाव वाले ने कहा आप तो सज्जन पुरूष है भागा गुलाम कोई और है फिर परची डाल कर नाम निकाला तो हज़रत यूनुस अलै0 ही का नाम निकला, तीन बार पर्ची डाली हर बार हज़रत यूनुस अलै0 का नाम निकला विवश हो कर हज़रत यूनुस अलै0 को नदी में फेंक दिया गया, नदी में एक बहुत बड़ी मछली ने हज़रत यूनुस अलै0 को निगल लिया अब यहां से अल्लाह की ओर से चमत्कार आरंभ होता है, मछली को आदेश हुआ कि युनुस को आहार न बना अपितु जैसे बच्चा मां के पेट में सुरक्षित रहता है इसी प्रकार उनको सुरक्षित रखना, अब यूनुस अलैहिस्सलाम नदी की गहराई और मछली के पेट में जीवित थे वह अल्लाह की तौफीक़ से, अल्लाह से दुआएं करने लगे और कहते थे "लाइलाह इल्ला अन्त सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़लिमीन"।

अनुवादः *ऐ मेरे अल्लाह तेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं पाक है तेरी हस्ती, निस्संदेह मैं दोषी हूं।*

हदीस में आता है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा को बताया कि कोई मुसीबत आने पर हज़रत यूनुस अलै0 की यह दुआ पढ़ने से मुसीबत दूर हो जाती है, अतएव हज़रत यूनुस की दुआ कबूल हुई और मछली को आदेश हुआ कि वह उन को नदी के किनारे उगल दे कुर्आन में है कि अगर यूनुस अलै0 दुआ न करते तो क़ियामत तक मछली के पेट में रहते, बहर हाल मछली ने उन को नदी के किनारे उगल दिया वह इतने निर्बल हो गए थे कि चल फिर नहीं सकते थे वह मछली के पेट में कितने दिन रहे इस में टीकाकारों में मतभेद है जितने दिन रहे हों वह अत्यन्त निर्बल थे अल्लाह ने उनके करीब ही एक लता वाला पेड़ उगा दिया उसको कुर्आन में "यक्तीन" कहा गया है उस का अनुवाद लोगों ने कद्दू से किया है उसके पत्तों ने आप पर साया कर दिया, पहाड़ी बकरी को आदेश हुआ वह आकर आप को दूध पिला जाती थी इस प्रकार वह चन्द दिनों में स्वस्थ हो गए।

अब दूसरी ओर का हाल सुनिये, नैनवा के कुछ लोगों ने देखा कि एक भेड़िया एक बच्चे को लिए जा रहा है, उन्होंने उस बच्चे को भेड़िये से छुड़ा लिया, बच्चा सही सालिम था। लोगों ने पहचाना यह बच्चा तो यूनुस का है, दूसरी ओर कुछ लोगों ने देखा कि नदी में एक औरत और एक बच्चा दोने बहे चले जा रहे हैं लोगों ने उन्हें निकाला और पहचाना कि यह तो यूनुस की बीवी और उनका बच्चा है उनको घर ले आए मां दोनों बच्चों को पा कर खुश थी लेकिन उस को हज़रत यूनुस अलै0 का गम था।

अब वह दिन आ गया जिस दिन हज़रत यूनुस ने अज़ाब आने की चेतावनी दी थी, अज़ाब के आसार दिखने लगे नैनवा के लोग घबरा गए औरत, मर्द, बूढ़े, बच्चे, जवान सब घरों से निकल पड़े और अल्लाह के सामने रोने गिड़गिड़ाने लगे और कहने लगे हम हज़रत यूनुस अलै0 पर ईमान लाए ऐसा रोए कि उन पर से अल्लाह ने अज़ाब टाल दिया पवित्र कुर्आन में है कि कोई क़ौम ऐसी नहीं गुजरी कि जिस पर अज़ाब आ के टल गया हो और उस के ईमान ने उस को फाइदा पहुंचाया हो सिवाय यूनुस अलै0 की कौम के वह अल्लाह के सामने ऐसे रोए गिड़गिडाए कि उन से अज़ाब रोक लिया गया, अज़ाब से नजात के बाद कौम को हज़रत यूनुस अलै0 की तलाश हुई और कुछ लोग नदी के किनारे पहुंच गए वहां हज़रत यूनुस को पा लिया, उनको कौम के ईमान लाने और रोने गिड़गिड़ाने के सबब अज़ाब के टल जाने का माजरा सुनाया, हज़रत यूनुस अलै0 बहुत शुख हुए उनके साथ बस्ती में आए वहां बीवी बच्चों का पा कर और खुश हुए अल्लाह तआला का खूब खूब शुक्र अदा किया, अल्लाह तआला ने हज़रत यूनुस अलै0 को, उनके घर वालों को और उनकी क़ौम को काफी दिनों तक सुख चैन से रहने का अवसर दिया। इस लेख की मालूमात नीचे लिखी कुर्आनी आयतों की तफ्सीरों से ली गई हैं।

(सूर यूनुस आयतः 98, सूरे अंबिया आयतः 87–88, सूरे साफ्फात आयतः 139–148)

सीखः हम को चाहिए कि हम अपने दीन और ईमान पर हर हाल में जमें रहें, जब कोई मुसीबत आए तो दुरूद पढ़ कर हज़रत यूनुस की दुआ जो पीछे लिखी गई और जो सूरे अंबियाः 87 में मौजूद है भारी संख्या में पढ़ कर अल्लाह तआला से दुआ करें तो उम्मीद है कि मुसीबत टल जाए। ◆◆

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

हुस्न का जेवर है, अगर तलाक़ की बागडोर औरतों के हाथ में दे दी जाती तो वह मामूली मामूली बातों पर तलाक़ वाक़े कर लेतीं, जैसा कि आए दिन औरतों की तरफ से तलाक़ के मुतालबे के वाकियात सामने आते रहते हैं जिन में खुद उन का नुक्सान है, इन तमाम और इनके अलावा हिक्मतों का तक़ाज़ा है कि तलाक़ का इखतियार मर्द ही को हासिल हो।

प्रश्नः औरत पर अगर जुल्म हो रहा है और वह तलाक़ चाहती है मगर मर्द तलाक़ नहीं दे रहा है तो वह क्या करे?

उत्तरः ऐसे ज़ालिम शौहर से छुटकारे का शरई तरीक़ा यह है कि औरत शौहर से छुटकारा पाने के लिए शौहर से खुला चाहे यानी अपना महर वगैरा मुआफ कर के छुटकारा चाहे लेकिन अगर शौहर इस पर भी राज़ी न हो तो शरई काज़ी के पास जाए क़ाज़ी देखेगा कि अगर वाकई औरत मज़लूम है और गुजारा मुश्किल है तो वह निक़ाह फस्ख (विच्छेद) करके उस को नजात दिला देगा।

❖❖❖

क़ारून और उसका ख़ज़ाना

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

क़ारून बनी इस्राईल से था, उसका परिवार और हज़रत मूसा अलै0 का परिवार, हज़रत याक़ूब अलै0 के एक बेटे ''लादी'' की संतान से थे, क़ारून भी उन्हीं की संतान से था। अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलै0 को नबी बनाया था, लेकिन क़ारून अपने कुकर्मों के कारण काफिर था टीकाकार लिखते हैं कि क़ारून बड़ा सुन्दर था इतना सुन्दर कि लोग उस को उज्जवल (मुनव्वर) कहते थे अल्लाह ने उस को अत्यधिक धन दे रखा था, वह अपने धन के घमण्ड ही में काफिर हुआ था और अपने कुफ्र (नास्तिकता) के कारण ही हज़रत मूसा अलै0 को छोड़ कर बनी इस्राईल के सब से बड़े शत्रु फिरऔन से जा मिला था वह पथ भ्रष्ट लोगों पर बड़ा अत्याचार करता था अपना धन अल्लाह की राह में खर्च नहीं करता था उसकी कौम के भले लोगों ने बहुत समझाया कि इस धन से तू स्वयं लाभ उठा और अल्लााह के निर्धन बन्दों पर खर्च कर अल्लाह ने तुझ पर बड़ा उपकार किया है तू भी अल्लाह के बन्दों पर उपकार कर के उसकी प्रसन्नता प्राप्त कर और उस का शुक्र अदा कर, परन्तु उसने न अपनी क़ौम की बात मानी न हज़रत मूसा अलै0 पर ईमान लाया अपितु अपनी सुन्दरता और अपने धन के घमण्ड में नास्तिकता पर डटा रहा बल्कि आगे बढ़ कर हज़रत मूसा अलै0 पर झूठा आरोप लगा कर उन को कष्ट दिया और उन को दुखी किया अनततः हज़रत मूसा अलै0 के श्राप से धरती में धंसा दिया गया जिस का उल्लेख पवित्र कुर्आन में इस प्रकार आया है।

अनुवादः निश्चय ही कारून मूसा की क़ौम में से था, फिर उसने उनके विरुद्ध सिर उठाया और हमने उसे इतने ख़जाने दे रखे थे कि उनकी कुंजियां एक बल शाली दल को भारी पड़ती थीं। जब उससे उस की क़ौम के लोगों ने कहाः इतरा मत, अल्लाह इतराने वालों को पसन्द नहीं करता।

जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आखिरत के घर का निर्माण कर और दुन्या में अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर, जैसा कि अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत चाह। निश्चय ही अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों को पसन्द नहीं करता।

उसने कहाः मुझे तो यह मेरे अपने व्यक्तिगत ज्ञान के कारण मिला है। क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितनी ही नस्लों को विनष्ट कर चुका है जो शक्ति में उससे बढ़ चढ़कर और बाहुल्य में उससे अधिक थीं? अपराधियों से तो (उन की तबाही के समय) उनके गुनाहों के विषय में पूछा भी नहीं जाता।

फिर वह अपनी क़ौम के सामने अपने ठाठ—बाट में

निकला। जो लोग सांसारिक जीवन के चाहने वाले थे, उन्होंने कहाः क्या ही अच्छा होता जैसा कुछ क़ारून को मिला है, हमें भी मिला होता! वह तो बड़ा भाग्यशाली है।

किन्तु जिन को दीन का ज्ञान प्राप्त था, उन्होंने कहाः अफ़सोस तुम पर! अल्लाह का प्रतिदान उत्तम है, उस व्यक्ति के लिए जो ईमान लाए और अच्छा कर्म करे, और यह बात उन्हीं के दिलों में उतरती है जो धैर्यवान होते हैं।

अन्ततः हम ने उस को और उस के घर को धरती में धंसा दिया। और कोई ऐसा गिरोह न हुआ जो अल्लाह के मुक़ाबले में उस की सहायता करता, और न वह स्वयं अपना बचाव कर सका।

अब वही लोग, जो कल उसके पद की कामना कर रहे थे, कहने लगेः अफ़सोस हम भूल गए थे कि अल्लाह अपने बन्दों में जिस के लिए चाहता है रोज़ी कुशादा करता है और जिसे चाहता है नपी–तुली देता है। यदि अल्लाह ने हम पर उपकार न किया होता तो हमें भी धंसा देता। अफ़सोस हम भूल गए थे कि इनकार करने वाले सफल नहीं हुआ करते। (अल–कसस: 76–82)

सीखः

1. हम को अधिक धन की कामना नहीं करना चाहिए।

2. अगर अल्लाह तआला अपनी कृपा से धनवान बना दे, अधिक धन दे दें तो घमण्ड नहीं करना चाहिए बल्कि अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और धन का हक़ अदा करना चाहिए अर्थात ज़कात, खैरात निकाल कर निर्धनों तथा बे सहारा अनाथों (यतीमों) विधवाओं और दीन के दूसरे आवश्यक कामों पर खर्च करना चाहिए।

3. गरीबी हो या अमीरी हर हाल में ईमान पर जमे रहना चाहिए, अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत से मुंह न मोड़ना चाहिए।

❖❖❖

तरा-नए-हिन्दी

सारे जहां से अच्छा,
हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी,
यह गुलसितां हमारा
ग़ुर्बत में हों अगर हम,
रहता है दिल वतन में
समझो वहीं हमें भी
दिल हो जहां हमारा
पर्वत वह सबसे ऊँचा
हम साया आस्मां का
वह संतरी हमारा
वह पासवां हमारा
गोदी में खेलती हैं
इसकी हज़ारों नदियां
गुलशन है जिनके दम से
रश्के जिना हमारा
मज़हब नहीं सिखाता
आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम वतन है
हिन्दोस्तां हमारा
युनान मिस्र व रोमा
सब मिट गये जहां से
अब तक मगर है बाक़ी
नामो निशा हमारा
इक़्बाल कोई महरम
अपना नहीं जहां में
मालूम क्या किसी को
दर्दे निहा हमारा

❖❖❖

ख़ा-नए-कअ़बा और हज के फाइदे

—मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

खा-नए-कअ़बाः-

मक्का मुकर्रमा का एक खास मुक़ाम जिस को खा—नए—कअ़बा कहते हैं और जिसके इर्द गिर्द और आस पास हज के सारे अरकान अदा होते हैं, इस को कुर्आन में बैते अतीक़ (पुराना घर) मस्जिदे हराम (मुहतरम मस्जिद) खुदा का घर और बक्का और क़िब्ला भी कहा गया है इसी की तरफ हम पांचों वक़्त मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं और उसकी तरफ मुंह कर के पेशाब, पाखाना करने से रोका गया है, कुर्आन में कहा गया है कि ''खुदा की इबादत करने के लिए इस ज़मीन पर सब से पहली इबादत गाह मक्के में तामीर हुई'' यानी इस की तामीर सब से पहले हज़रत आदम अलै0 के हाथों हुई, फिर हज़रत नूह अलै0 के तूफान में उसकी इमारत मुन्हदिम हो गई, फिर हज़रत इब्राहीम अलै0 ने उसको दोबारा तामीर किया, आप के बाद भी कई बार यह इमारत गिरी और बनी हज़रत इब्राहीम अलै0 के काबे की तामीर का जिक्र कुर्आन में तफ्सील से है, इस तामीर में हज़रत इब्राहीम के साथ इनके साहिब जादे और मशहूर नबी हज़रत इस्माईल अलै0 भी शरीक़ थे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने से पहले भी एक बार सैलाब की वजह से यह इमारत गिर गई थी तो कुरैश ने फिर उसको उठाया मगर जब इमारत तैयार हो गई तो हजरे अस्वद को उसकी जगह पर रखने के वक़्त लोग आपस में लड़ने लगे, हर कबीला यह चाहता था कि इस मुतबर्रक पत्थर को हम रखें, यह झगड़ा किसी तरह खत्म नहीं होता नज़र आ रहा था तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फैसला फरमाया कि हजरे अस्वद को एक बड़ी चादर में रख दिया जाए और उस चादर को हर क़बीले के सरदार पकड़ कर उठाएं जब उन लोगों ने चादर उठाई तो आपने हजरे अस्वद को उसकी जगह पर रख दिया और झगड़ा खत्म हो गया, कुरैश ने तामीर की, खर्च कम होने के सबब इसमें हतीम के हिस्से को अलग कर दिया, आपने गालिबन हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर फरमाया कि अगर कुरैश के यह लोग हदीसुल इस्लाम (इस्लाम में नये नये) न होते तो मैं इस को उसी तरह बना देता जैसा कि हज़रत इब्राहीम अलै0 के ज़माने में था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि0 की हुकूमत जब हिजाज़ पर हुई तो उन्होंने इर्शादे नबवी के मुताबिक़ बुन्यादे इब्राहीमी के मुताबिक़ उसे बना दिया, मगर जब हज्जाज बिन यूसुफ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर को शिकस्त दी तो फिर उस नालाइक़ ने हतीम के

हिस्से को अलग कर दिया बाद के खुलफा ने फिर उसे अस्ल सूरत में वापस करने का इरादा किया तो इमाम मालिक रह0 ने मना कर दिया कि कअ़बा को इसी तर अगर गिराया और बनाया गया तो यह एक खेल हो जाएगा चुनांचे मौजूदा इमारत उसी हालत में मौजूद है अल्बत्ता उसकी मरम्मत होती रहती है।

हज कब फर्ज़ हुआ?:-

हज की अहम्मीयत तो मिल्लते इब्राहीमी में पहले से थी मगर इस की फरजीयत हिजरत के बाद 2 या 3 हिजरी में हुई, हज के अहकाम और फरजीयत का ज़िक्र सूरे बकरा और सूरे आल इमरान और सूरे हज तीनों में है, सूरे बकरा का बेश्तर हिस्सा 2 हिजरी में और सूरे आले इमरान का बेश्तर हिस्सा 3 हिजरी में यानी गज़–वए–बद्र के बाद से नाज़िल होना शुरुअ हुआ इसलिए हज ज़ियादा से ज़ियादा 3 हिजरी में फर्ज हुआ होगा मगर कुफ्फारे कुरैश ने लड़ाइयों का ऐसा सिलसिला शुरुआ कर दिया था कि आप को और सहाबा को इस सआदत के हासिल करने का मौका ही नहीं मिला, 6 हिजरी में गज़–वए–अहजाब के बाद कदरे सुकून हुआ तो आपने इसी साल उमरे का इरादा फरमाया।

जब तक आप और सहाबा मक्के में थे, कअ़बे की ज़ियारत से शरफ अन्दोज़ होते रहे, हिज़रत के बाद वह इस सआदत से महरूम हो गए लेकिन कअ़बे की ज़ियारत का शौक़ ज़ौक़ हर दिल में बाक़ी था, चुनांचे फरज़ीयते हज के तीन साल बाद आप उमरे की नीयत से 6 हिजरी में चौदा सौ सहाबा को साथ लेकर मदीने से मक्का रवाना हो गए मगर कुफ्फारे कुरैश ने रुकावट डाली और आपको और सहाबा को हुदैबीया के मुक़ाम पर रोक दिया, इसी मौक़े पर आप ने उन से वह मशहूर सुल्ह की जो ''सुल्हे हुदैबीया'' के नाम से मशहूर है, फिर आप उस सुल्ह के मुताबिक मदीना वापस आ गए और 7 हिजरी में अपने सहाबा के साथ मक्का जा कर इस उमरे की कज़ा की। और फिर 8 हिजरी में फ़त्हे मक्का के मौके पर आप ने और सहाबा ने कअ़बे की ज़ियारत की और तवाफ किया, और फिर 10 हिजरी में आपने बाक़ाइदा हज अदा फरमाया जिस को हिज्जतुल वदाअ़ कहा जाता है, (इसी को सामने रखते हुए बाज़ उलमा ने लिखा है कि हज 9 हिजरी में फर्ज हुआ, हुसैन अहमद) और इसी के तीन चार महीने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रफीक़े आला से जा मिले।

हज के फाइदेः-

हज का अस्ली फाइदा तो यह है कि इस फर्ज से क़ियामत की याद ताज़ा होती है जिस तरह कियामत के दिन सब लोग अपने अपने कफन में उठेंगे इसी तरह तमाम हाजी एक तरह के लिबास में हज करते हैं, जिस तरह मैदाने हश्र में सब लोग हाजिर होंगे और उन से पूछ गछ होगी उसी तरह अरफात के मैदान में सब लोग जमा हो कर उस तसव्वुर को ताज़ा करते हैं। इसी तरह हज का हर रुक्न खुदा की फरमांबरदारी और

शेष पृष्ठ....38 पर

शादी ख़ाना आबादी

—मौलाना अब्दुल क़ादिर नदवी

शादी का लफ़्ज़ ही ऐसा है कि किसी जवान के सामने लीजिए तो उसकी आंखों में चमक, चेहरे पर मुस्कुराहट और पूरे जिस्म पर एक खुशी की लहर दौड़ जाती है।

और जवान की क्या बात है बूढ़े भी इस लफ़्ज़ से कुछ कम लुत्फअन्दोज़ नहीं होते बल्कि थोड़ी देर के लिए वह भी जवानी की तरफ लौट आते हैं, बल्कि अगर अज़कार रफ्ता उम्र तक पहुंच गये हों तब भी मज़ा लेते हुए, कहने लगते हैं।

गो हाथ में जुम्बिश नहीं आंखों में तो दम है।
रहने दो अभी साग़र व मीना मेरे आगे।।

अलग़रज़ शादी के माने जिस तरह खुशी के हैं उसी तरह यह लफ़्ज़ अपने अन्दर खुश करने की तासीर भी रखता है और हक़ीक़त भी यही है कि शादी में खुशी ही खुशी है, इसी वजह से इन्सान की इब्तिदा से हर ज़माने में उसका दौर जारी व सारी रहा और बादे मर्ग भी जन्नत में ये सिलसिला चलता रहेगा।

शादी क्यों ज़रूरी है? क्या इसमें लुत्फ ही लुत्फ है? मज़ा ही मज़ा है? इसकी कोई क़ीमत अदा नहीं करनी पड़ती? क्यों कभी इसमें नाकामी नहीं होती? क्या इसका नतीज़ा कभी बरअक्स नहीं निकलता? अगर ऐसा ही है तो फिर बाज़ लोग शादी से गुरेज़ क्यों करते हैं? उम्र का एक मोअतदबिह हिस्सा गुज़र जाता है फिर भी उसके लिए हिम्मत क्यों नहीं करते?

वाक़िया तो यही है कि इसमें लुत्फ ही लुत्फ है, मज़ा ही मज़ा है, इससे शादी करने वाले जोड़े का मक़ाम समाज में बुलनद हो जाता है, इससे ज़िन्दगी में सुकून हासिल होता है, इससे औलाद जैसी नेअमत हासिल होती है, इससे हर नेक मक़सद को पूरा करने में मदद मिलती है, इससे मर्द और औरत के अख़लाक बेहतर होते हैं, हिल्म व बुर्दबारी जैसी बुन्यादी, अख़लाक़ी सिफात हासिल होती हैं, रोज़ी में बरकत होती है, इससे एक अच्छा खानदान वजूद में आता है और चन्द अच्छे खानदान मिल कर एक बेहतर समाज बनता है, इससे रिश्तेदारों की तादाद में बड़ा इज़ाफा होता है जिससे ज़िन्दगी के मुखतलिफ मराहिल में मदद मिलती है और तरक्की की राहें खुलती हैं, अलगरज़ शादी में बेशुमार फायदे हैं, इसमें कोई शक नहीं है। रही बात कीमत की तो कौन सी ऐसी नेअमत है जिसकी कीमत न अदा करनी पड़ती हो, खाना हो या कपड़ा, मकान हो या सवारी, जेवर हो बाग हो हर चीज़ की तो हम क़ीमत अदा करते हैं तो फिर शादी की क़ीमतसे खौफ क्यों? ये तो कम हिम्मती, बेहिम्मती या नामर्दी की बात हुई कि आदमी शादी से इस लिए डरे या भागे कि इसकी कीमत अदा करनी पड़ेगी।

यह कोई डरने की बात नहीं, क्योंकि इसके बदले जो इज्ज़त, औलाद और सहयोग व तआवुन मिलता है उसकी क़ीमत से कहीं ज़ियादा कीमती है। तो रहा नाकामी का अन्देशा या बरअक्स नतीजा बरआमद होने का डर तो यह भी शैतानी वसवसा या वही कम हिम्मती की बात है वरना आप तालीम हासिल करते हैं उसके पीछे उम्र का सबसे बेशकीमती वक़्त सर्फ करते हैं और लाखों रूपये बहाते हैं और नतीजा बहर हाल सबके हक़ में मुवाफिक़ नहीं होता तो क्या कोई अक़्लमन्द तालीम छोड़ने का मशवरा देगा? हरगिज नहीं, क्यों? इसलिए कि कुछ की नाकामी से हर एक के लिए यह फैसला नहीं किया जा सकता।

बाज़ार में एक से बढ़ कर एक कारोबार शुरु होते हैं इसमें कामयाबी मिलती है और नाकामी का सामना भी करना पड़ता है तो क्या लोग कारोबार छोड़ देते हैं कि इसमें पैसा, वक़्त सलाहियत, आराम सब कुछ ज़ाए होता है? हरगिज़ नहीं बल्कि बड़ी उम्मीदों के साथ बड़े वसीलों और बुलन्द हिम्मती से आये दिन नये नये कारोबार शुरु होते रहते हैं, फलते फूलते हैं और तरक़्की की औज पर पहुंचते हैं। अक़्लमंदी की बात है कि शादी ज़रूर करना चाहिए और मुनासिब उम्र में करना चाहिए और खुदानख्वास्ता रफीक–ए–हयात या रफीक़े हयात के अपनी अजल आने से इस नेअमत से महरूमी हो जाये तो ज़रूरत हो तो दूसरी शादी कर लेनी चाहिए कि यही दुन्या के लिए भी बेहतर है और आख़िरत व दीन के लिए भी, दुन्या में चरिन्द परिन्द बल्कि दरिन्दे भी जोड़े ही से रहते हैं, बग़ैर जोड़े के कोई नहीं रहता, हां अगर कोई इस हालत में शादी न करे तो उसको मजबूर समझना चाहिए जिस मजबूरी का हम को मालूम होना या मालूम करना ज़रूरी नहीं है।

शादी की नाकामी में अकसर व बेशतर किसी ग़लती का असर होता है मसलन इन्तिखाब में हुस्न व जमाल को मक़सद बनाया जो ज़ाएल होने वाली चीज़ है, जो हस्बे तवक्को हासिल नहीं हुआ या बड़े खानदान से रिश्ता जोड़ कर खुद बड़ा बनना चाहा जिसमें हस्बे मन्शा कामयाबी नहीं हुई, या किसी वक्ती गलबे से रिश्ता कर लिया जो बाद में न रहा, आमतौर पर नाकामी के असबाब यही होते हैं।

हमारे ज़माने में एक बड़ा सबब जलदी मालदार बनने का शौक और उसमें कमाई के लिए बैरूनी सफर और लम्बी लम्बी मुद्दत तक मियां–बीवी में दूरी भी एक बड़ा सबब शादी में नाकामी का बन रहा है जिसकी तरफ तवजोह देने की ज़रूरत है और यह लम्ह–ए–फ़िकरिया है।

बहरहाल शादी अगर सही मकसद से, सही तरीक़े से की जाये तो यह हमखुरमा व हम सवाब (शीर खुरमा भी खाओ और सवाब भी मिले) और दायमी इबादत है, शादी के लिए इससे बढ़ कर क्या सनद चाहिए कि सैय्यदुल अन्बिया "सुन्नती" (मेरा तरीक़ा) फरमायें।

शादी के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है, और मज़ीद बहुत कुछ लिखा जा सकता है मगर मिज़ाजे ज़माना ये है कि मुख्तसर चीज़ को पसन्द किया जाता है ताकि एक दो मजलिस में इसको पढ़ लिया जा सके। इसी के पेश नज़र हम मुख्तसरन लिखते हैं।

शादी का मक़सदः-

शादी खाने पीने और मकान व सवारी की तरह एक फितरी ज़रूरत है जिसका एहसास बल्कि तक़ाज़ा इन्सान को बालिग़ होने की उम्र से पहले ही होने लगता है, जिस तरह भूक में खाने का तक़ाज़ा होता है अगर इस तक़ाज़े को सही ढंग से पूरा करना है तो उसके लिए शादी लाज़िम है जिसके फायदे आप पढ़ चुके हैं कि उससे अच्छा खानदान और अच्छा समाज वजूद में आता है और अगर उसको कानून से आज़ाद हो कर पूरा किया जाये तो बड़ा नुकसान होता है, यही क्या कम है कि इन फायदों से आदमी महरूम हो जाता है जिसका ज़िक्र पहले गुज़र चुका है।

मज़ीद नुकसान यह है कि इज़्ज़तें खतरे में पड़ जाती हैं, जंग जिदाल तक की नौबत पहुंच जाती है, खुदकुशी की वारदातें होने लगती हैं, माल व दौलत व इज़्ज़त सभी का नुकसान होता है, अख़लाक़ी अनारकी पैदा हो कर मुआशरा व समाज बर्बादी की राह पर पड़ जाता है और आखिरकार तबाही के सिवा कोई राह नहीं रह जाती, न तहज़ीब बाकी रहती है न मुल्क व हुकूमत, लेकिन चूंकि यह सब बतदरीज आहिस्ता आहिस्ता होता है इसलिए इन्सान को धोखा लगता है कि फलां मुल्क वाले तो ऐसा ऐसा करते हैं और तरक्क़ी भी पाये हुए हैं, यह सब धोखा है उनकी तरक़्क़ी पहले की कुर्बानियों का नतीजा है और आज की अखलाक़ी अनारकी का बुरा नतीजा कल नज़र आयेगा जिसकी इब्तिदा दानिश्मंदों की आंखें साफतौर पर देख रही हैं।

इसी वजह से शादी करना, शादी कराना, शादी में किसी भी दर्जे में मददगार बनना सब में अज्र व सवाब है और अच्छे लोगों के नज़दीक यह सब काम अच्छे शुमार किये जाते हैं, हमारे दोस्त शादियों को आसान बनाने और कमज़ोर तब्क़े के नौजवान लड़कों और लड़कियों की शादी का नज़्म करते, हम सबके शुक्रिये के हक़दार हैं, अल्लाह तआला उनको बेहतरीन बदला नसीब फरमाए आमीन।

एक मुसलमान को शादी में कई नियतें करनी चाहिए मसलन अल्लाह के हुक्म की फरमांबरदारी, अल्लाह के रसूल की सुन्नत की अदायगी, नफ़्स के जायज़ तक़ाज़े को सही ढंग से पूरा करके हराम से बचना और इस तरह दिल व दिमाग़ हाथ, पैर और निगाह के गुनाह से फिहाज़त नेक औलाद के हासिल होने और उससे नेकी के आम करने में मदद वगैरह वगैरह, जो जितनी नियतें करेगा उसको उसी लिहाज़ से सवाब मिलेगा और नफ़्स का तक़ाज़ा तो हर हाल में पूरा होना ही है।

बीवी या शौहर का इन्तिखाबः-

शादी में निकाह से पहले मर्द के लिए बीवी का इन्तिखाब जरूरी है क्योंकि अच्छी बीवी घर को जन्नत बना देती है, गरीबी हो अमीरी हो हर हाल में घर में सुकून व राहत का बाइस होती है और घर की इज्जत को बाकी रखती है बल्कि बढ़ाती है, अच्छी बीवी अल्लाह की बड़ी नेअमत है, मगर सवाल यह है कि अच्छी बीवी किस को कहा जाये?

आफताब व माहताब जैसी सूरत भला किस को नहीं भाती, मालदार खानदान की बीवी से मालदार खानदान के दामाद से लोग बहुत सी तवक्कुआत रखते हैं, बड़ी उम्मीदें बांधते हैं, नामवर बाइज्ज़त खानदान वालों से रिश्तेदारी को लोग फख़रिया बयान करते हैं, यह सब भी अच्छी चीज़ें हैं मगर ज़िनदगी के नशेब व फराज़ में बल्कि हर मोड़ पर जो साथ दे सकती है वह दीनदार, समझदार बीवी है, दीनदारी और समझदारी का मुकाबला कोई चीज़ नहीं कर सकती है इसी लिए हमारे मुश्फिक़ व मोहसिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम को दीनदार बीवी इख्तियार करने का हुक्म दिया है।

इसी तरह दामाद का मसला भी है इसमें गलती करने से बड़ी आज़माइशों का सामना करना पड़ता है।

नोटः- यह लेख मौलाना अब्दुल क़ादिर पट्टनी नदवी उस्ताद दारुल उलूम नदवतुल उलमा के किताबचे ''शादी खाना आबादी'' से लिया गया है मौलाना का यह किताबचा बहुत ही मुख्तसर और कार आमद है जो उर्दू, हिन्दी दोनों ज़बानों में एक साथ छापा गया है। गैर शादी शुदा नवजवानों को इसे जरूर पढ़ लेना चाहिए इस किताबचे की कीमत केवल ₹30/- है।

◆◆

--मिलने का पता--

1. जामिअतुन्नूर रख़्तावाड़ा पट्टन, गुजरात—384265
2. मज्लिस तहकीकात व नशरियात नदवतुल उलमा, पोस्ट बाक्स नं0 93 लखनऊ।

जारी.....

खा-नए-कअ्बा.....

क़ियामत की किसी न किसी हौलनाक़ी को याद दिलाता है, इससे खुदा की महब्बत ताज़ा होती है और इस के साथ इश्क़ का इज़्हार होता है, और एक मोमिन की सब से बड़ी सआदत यह है कि वह इश्के खुदावन्दी और महब्बते इलाही का मज़हर बन जाए इससे आदमी में ख्वाहिशाते नफ्स पर क़ाबू पाने का जज़्बा पैदा होता है, तवाजो व इन्किसारी पैदा होती है सब्र व तहम्मुल और बुर्दबारी की आदत पड़ती है, इन के अलावा और बहुत से दुन्यावी फाइदे हैं, इसके ज़रिये दुन्या के तमाम मुसलमान मुल्कों के लोगों से मिलने का इत्तिफाक़ होता है इसमें शामी भी होते हैं और मिस्री भी, इराक़ी भी होते हैं और सूडानी भी, इण्डोनेशियन भी होते हैं और चीनी व जापानी भी यूरोप के भी होते हैं और अमरीका के भी, गरज़ कि सारी दुन्या के मुसलमान होते हैं, फिर सफर करने से आदमी के तजरबे और मालूमात में इजाफा होता है, इसके जरिये इस्लामी शान व शौकत का इज़्हार होता है, आदमी को तक्लीफें उठाने और ज़हमतें बरदाश्त करने की आदत पड़ती है।

❖❖❖

स्वतंत्रता दिवस

दिवस स्वतंत्रता आओ मनाएं
ले के तिरंगा हम फहराएं
राष्ट्र गीत फिर हम सब गाएं
लड्डू पेड़ा बर्फी खाएं
भारत प्यारा ज़िन्दाबाद
हिन्द हमारा ज़िन्दाबाद
आज़ादी देती है प्याम
करें तरक्की हम हर गाम
इल्मो हुनर यां कर दें आम
हो परियोजित यां हर काम
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
रहें यहां सब जैसे भाई
एक पितामह की संतान
आपस में न करें लड़ाई
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद
कोई रब को ईश्वर कहता
कोई उस को अल्लाह कहता
कोई उस को गाड है कहता
हर कोई है उस को जपता
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद

निर्माता तथा स्वामी के समक्ष उत्तरदायित्व का ध्यान

—प्रसिद्ध विद्वान सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

यह कितनी दूषित बात है कि मानव समाज स्वार्थियों का समाज बन जाए, हर एक अनुचित मार्ग द्वारा लाभ प्राप्त करने का प्रयास करे, अतः हम में से हर एक का कर्तव्य है कि अपने समाज में ऐसी बात न होने दें और इसके लिए प्रयास करें कि मानव में मानव जैसे आचरण पैदा हों, वह अपने निर्माता तथा स्वामी के समक्ष उत्तरदायित्व होने का ध्यान रखे, कि निर्माता पूछेगा कि हम ने तुम को बुद्धि दी थी, ज्ञान दिया था, फिर भी तुम ने अपना जीवन विकृत क्यों बिताया, उस समय हमारे पास क्या उत्तर होगा? और अगले जीवन (उक़्बा) पर विश्वास रखने वालों अर्थात मुसलमानों को और अधिक विचार करना चाहिए कि जब वह दूसरे जीवन में अपने स्वामी के समक्ष उपस्थित होंगे तो क्या उत्तर देंगे, हम को पवित्र कुर्आन तथा पवित्र हदीस द्वारा अच्छी बातें बताई गई हैं और बुरी बातों से अवगत कराया गया है। और जिन को इन बातों का ज्ञान नही है वह पवित्र कुर्आन तथा पवित्र हदीस से इन बातों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, इस विषय में लोगों को समझाने की आवश्यकता है कि वह अच्छा जीवन ग्रहण करें समाज के विकार को दूर करने का प्रयास करें।

❖❖❖

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये

—पिछले अंक से आगे

उसके बाद वाले सूराख़ के सामने प्यारे नबी का चेहरा है।
اس کے بعد والے سوراخ کے سامنے پیارے نبیؐ کا چہرہ ہے۔
उस के बाद वाले सूराख़ की सीध में हज़रत अबू बक्र का चेहरा माना जाता है।
اس کے بعد والے سوراخ کی سیدھ میں حضرت ابو بکرؓ کا چہرا مانا جاتا ہے۔
उसके बाद वाले सूराख़ की सीध में हज़रत उमर का चेहरा माना जाता है।
اس کے بعد والے سوراخ کی سیدھ میں حضرت عمرؓ کا چہرہ مانا جاتا ہے۔
यह तीनों सूराख़ मवाजेह शरीफ़ कहलाते हैं।
یہ تینوں سوراخ مواجہ شریف کہلاتے ہیں۔
इन में पहले के सामने प्यारे नबी को सलाम किया जाता है।
ان میں پہلے کے سامنے پیارے نبیؐ کو سلام کیا جاتا ہے۔
उसके बाद वाले के सामने हज़रत अबू बक्र को सलाम किया जाता है।
اس کے بعد والے کے سامنے حضرت ابو بکرؓ کو سلام کیا جاتا ہے۔
उसके बाद वाले के सामने हज़रत उमर को सलाम किया जाता है।
اس کے بعد والے کے سامنے حضرت عمرؓ کو سلام کیا جاتا ہے۔
अल्लाह की रह़मतें और लाखों सलाम हों प्यारे नबी पर।
اللہ کی رحمتیں اور لاکھوں سلام ہوں پیارے نبیؐ پر۔
ह़ज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर पर भी।
حضرت ابو بکرؓ اور حضرت عمرؓ پر بھی۔
प्यारे नबी की आल पर और अज़वाज पर भी।
پیارے نبیؐ کی آل پر اور ازواج پر بھی۔
और नबी के सारे अस्ह़ाब पर भी।
اور نبیؐ کے سارے اصحاب پر بھی۔

नदवतुल उलमा

पो0 बा0–93, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007 यू0पी0 (भारत)

ندوة العلماء

پوسٹ باکس ۹۳، ٹیگور مارگ، لکھنؤ
۲۲۶۰۰۷ یوپی (ہند)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अहले ख़ैर हज़रात से!

खुदा का शुक्र है कि हम उन बेश कीमत उसूलों को सीने से लगाये हुए हैं जिन के लिए दारुल उलूम कायम किया गया था यानी जदीद ज़माने में इस्लाम की मुवस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन दुन्या की जामिइय्यत और इल्म व रूहानियत के इज्तिमाअ़ की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और जेहनी इरतिदाद का मुकाबला इस्लाम पर ऐतमाद और उलूमे इस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इजहार, दीने हक से वफादारी और शरीअ़त पर इस्तिकामत, हमारे नजदीक मालियात, बजट और अजीमुश्शान इमारतों के मुकाबले में इन मजकूरा मकासिद का हुसूल ज़ियादा अहम है। मस्अले की इस क़दर तशरीह और वज़ाहत के बाद अब ज़ियादा कुछ कहने की हाजत नहीं।

इन गुजारिशात के बाद आपसे हमारी दरख्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम की इफादियत को समझते हुए पूरी फराखदिली, फय्याजी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफाजत का इससे बेहतर कोई रास्ता और इस से ज़ियादा पायदार कोई सदक–ए–जारिया नहीं, आप में से जो लोग नदवतुल उलमा के पचासी साला जश्न में शरीक थे, उनको याद होगा कि नदवतुल उलमा के पचासी साला इजलास को खिताब करते हुए हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 ने गैर मुल्की मुअ़ज्जज महमानों की ओर इशारा करते हुए फरमाया था **"यह सोने की चिड़ियां सब उड़ जायेंगी, हम और आप यहां रहेंगे, आप यह न समझें कि अब आपको छुट्टी मिल गई, हम आप को छोड़ने वाले नहीं, हमारे सफीर आपके घरों पर जायेंगे, आप के चार आने, आठ आने, हम को अज़ीज़ हैं, वह उस दौलत का हजारवां हिस्सा होगा जो खुदा ने इन को दिया है, और आप जो देंगे वह आपके गाढ़े पसीने की कमाई होगी।"**

हिन्दुस्तान के मुसलमानों से चाहे वह इस लम्बे चौड़े देश के किसी इलाके के हों, हमारी मुकर्रर पुनः दरख्वास्त है कि वह इस काम की अहम्मीयत को समझें और इस को अपना ही काम समझें, हमें यक़ीन है और अल्लाह तआला की जाते आ़ली पर पूरा भरोसा है कि इन्शाअल्लाह नाजिम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सय्यद मु0 राबे हसनी नदवी मद्दाजिल्लुहु की बेश क़ीमत रहनुमाई व निज़ामत में अगर अहबाब व मुख्लिसीन ने पूरी दिलचस्पी ली तो हमारा यह पैगाम न सिर्फ मुल्क के बल्कि आलमे इस्लाम के कोने कोने में पहुंचेगा।

मौलाना मुहम्मद वाजेह रशीद नदवी
(मोतमद तालीम नदवतुल उलमा)
प्रो0 अतहर हुसैन
(मोतमद माल नदवतुल उलमा)

मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी
(प्रिंसपल दारुल उलूम नदवतुल उलमा)
मौलाना मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
(नायब नाजिम नदवतुल उलमा)

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें:–
नदवतुल उलमा/NADWATUL ULAMA
अतिया– **A/c. No. 10863759711**
ज़कात– **A/c. No. 10863759766**
State Bank of India, Main Branch, Lucknow,
IFS Code: SBIN0000125, Swift Code: SBININBB157

–:और इस पते पर भेजें:–
NAZIM NADWATUL ULAMA
NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA
TAGORE MARG, LUCKNOW-226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741231, 2741316, 2740151, Fax: 0522-2741221
E-mail: nadwa@bsnl.in/website: www.nadwatululama.org